कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिवशक्ति बक्सी

संपादक मंडल

सत्यपाल
संजीव कुमार सिन्हा

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

Qku : +91(11) 23381428
QDl : +91(11) 23387887
lnL;rk : +91(11) 23005798

ई-मेल
kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डा. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी-36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली-55 से मुद्रित करा के, डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक - प्रभात झा

विषय-सूची

राष्ट्रमंडल खेल : भारी भ्रष्टाचार
संयुक्त संसदीय समिति से जांच हो : गडकरी..... 6

कर्नाटक
मुख्यमंत्री येदियुरप्पा ने दोबारा हासिल किया विश्वास मत..... 9
भाजपा का प्रधानमंत्री को ज्ञापन..... 10
कृपया राजभवन को विपक्ष भवन मत बनने दीजिये
&vEck pj.k of'k"B..... 19

विशेष लेख
एक अक्षम्य भूल
&ykyÑ".k vkMok.kh..... 12
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए राष्ट्रहित सर्वोपरि
&jke yky..... 15
सही नब्ज़ पकड़ी डॉ. ने...
&idt >k..... 22

बिहार विधानसभा चुनाव पर विशेष रिपोर्ट
विकास से होगा चुनाव का फैसला
&lrho dekj flUgk..... 24

अन्य
गुजरात : छह नगर निगमों पर भाजपा ने लहराया परचम..... 27
उमर अब्दुल्ला का गैर-जिम्मेदाराना बयान..... 28
भोपाल गैस त्रासदी#विश्वासघात करनेवाले को बेनकाब किया जाए.. 29
म.प्र. : छतरपुर में जिला मंडल पदाधिकारी बैठक..... 30

उनका कहना है ...

अब समय आ गया है कि राष्ट्रमंडल खेलों में लूट में शामिल भागीदारों तथा इस गड़बड़ी को अनदेखा करके उन्हें राजनीतिक संरक्षण प्रदान करने वालों के बीच सांठ-गांठ का पर्दाफाश किया जाए।

नितिन गडकरी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

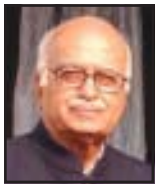

जम्मू एवं कश्मीर के किसी अन्य मुख्यमंत्री ने कभी इसका प्रतिवाद नहीं किया कि जम्मू एवं कश्मीर राज्य भारत का अभिन्न अंग है। ऐसा करके उमर ने न केवल भाजपा को चिढ़ाया है अपितु आगे बढ़कर जो कहा है उससे राज्य में अलगाववादी और पाकिस्तान का मीडिया हर्षोन्माद में है।

लालकृष्ण आडवाणी, अध्यक्ष, भाजपा संसदीय दल

उमर का यह कहना कि कश्मीर समस्या का समाधान किसी आर्थिक अथवा विकासात्मक पैकेज में निहित नहीं है तो क्या वे यह कहना चाहते हैं कि जम्मू-कश्मीर का मसला उसकी स्वायत्तता में निहित है। यदि वे भारत के संविधान में आस्था रखते हैं तो उन्हें देश की एकता व अखंडता का भी ध्यान रखना होगा।

डॉ. मुरली मनोहर जोशी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

पिछले पांच साल में राजग सरकार ने जैसे-तैसे भयावह दु:स्वप्न व अंधेरे से राज्य को बाहर निकाला है। इस अभियान को गति देने के लिए राजग को फिर से जनादेश चाहिए।

अरुण जेटली, राज्यसभा में विपक्ष के नेता

संपादक के नाम पत्र...

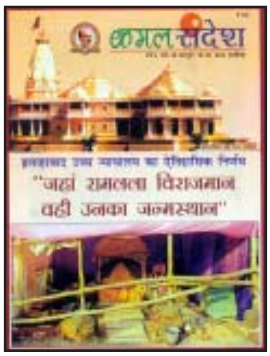

अपने एक मित्र के घर पर कमल संदेश (अक्टूबर 16–31, 2010) का अंक देखा। जब इसे पढ़ना शुरू किया तो एक ही बैठक में पूरी पत्रिका पढ़ गया। अयोध्या मामले को लेकर इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ द्वारा दिए गए निर्णय–"जहां रामलला विराजमान–वही उनका जन्मस्थान" पर विचारोत्तेजक सामग्री प्रस्तुत की गयी है। 'कमल संदेश' को यदि मैं 'गागर में सागर' कहूं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस पत्रिका में राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से घटित घटनाओं का विश्लेषण किया जाता है।

–वीरेन्द्र कुमार, सिंगियाही, सीतामढ़ी (बिहार)

'कमल संदेश' का 1–15 अक्टूबर, 2010 का अंक पढ़ने को मिला। इस पत्रिका में दी गई राजकीय, सामाजिक साहित्य सामग्री भारत की राष्ट्रप्रेमी जनता के लिए बहुत ही मार्गदर्शक एवं सराहनीय है। देश के समसामयिक मुद्दों पर जो विवरण दिया जाता है, वह प्रसंशनीय है।

–गोविंद खोखानी माधापार, भुज, कुच्छ (गुजरात)

पाठकों से निवेदन

किसी भी पत्रिका को पठनीय बनाने में पाठक की उल्लेखनीय भूमिका होती है। 'कमल संदेश' में छपी खबर, लेख, संपादकीय या समसामयिक मुद्दों पर आपकी राय सादर आमंत्रित हैं।

हमारा पता है:

lkikndh; dk uke i=
dey lans'k
डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास
पीपी–66 सुब्रहमण्य भारती मार्ग
नई दिल्ली–110003
आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं:
kamalsandesh@yahoo.co.in

भूल-सुधार

कमल संदेश (अक्टूबर 1–15, 2010) अंक में कठलाल विधानसभा उपचुनाव परिणाम से संबंधित प्रकाशित समाचार में कांग्रेस प्रत्याशी को प्राप्त मतों की संख्या प्रस्तुत करने में भूल हो गई थी। कांग्रेस प्रत्याशी को प्राप्त मतों की सही संख्या 40, 573 है। समाचार में हुई भूल के लिए हमें खेद है। (सं.)

राष्ट्रमंडल खेल : भ्रष्टाचार के लिए कांग्रेस जिम्मेदार

'वेल्थ' से जिनकी 'हेल्थ' बनी है उन्हें अब कटघरे में खड़ा करना चाहिए। देश की लाज जैसे–तैसे बचाने का प्रयत्न हुआ पर खेल के पहले जितना मैला फैला, वह किसी भी राष्ट्र के लिए स्वस्थ नहीं कहा जा सकता। दोषी सिर्फ कलमाड़ी क्यों, कांग्रेस क्यों नहीं? क्या कांग्रेस कलमाड़ी से अपने को अलग मानती हैं? क्या कलमाड़ी कांग्रेस के सांसद नहीं हैं? क्या कॉमनवेल्थ के चौसर पर शतरंज की चालबाजियां दिल्ली की कांग्रेस सरकार ने नहीं की? क्या शीला दीक्षित कलमाड़ी को आरोपित कर स्वयं बच जाएगी? कलमाड़ी तो काला माड़ी है ही, कलमाड़ी तो काले धन के करीब हैं। ही पर वे सफेदपोश भी नहीं बचने चाहिए, जिन्होंने कलमाड़ी की आड़ में अपने हाथ काले किए हैं, भ्रष्टाचार की ऐसी खुली छूट सोनिया जी द्वारा यह कहकर देना कि राष्ट्रमंडल खेल के बाद भ्रष्टाचार की जांच होगी, दुर्भाग्यपूर्ण है। दशहरा और दीपावली के बीच भ्रष्टाचार की ऐसी छूट देकर सोनिया जी ने किसका मस्तक ऊंचा किया, देश का या कांग्रेस का? हमें लगता है दोनों का सिर शर्म से झुका दिया। जो वेल्थ कॉमन का हो उससे ऐसा खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। देश भ्रष्टाचार का दस्तावेज देखना चाहता है। दस्तावेज में उस नकाबपोशों को भी देखना चाहता है जो दिन में सफेदपोश रहते हैं और रात में गोरखधंधा करते हैं। मसला यदि नहीं सुलझा और सत्य सामने नहीं आया तो संसद से सड़क तक कॉमनवेल्थ की गूंज वैसे ही गूंजती रहेगी जैसे 3 अक्टूबर के पहले गूंजती रही थी।

बिहार विधानसभा चुनाव : विकास को वोट

बिहार! प्रारंभिक रूझान से लगता है कि लालू और कांग्रेस दोनों की होगी हार। विकास की संस्कृति और सरकार की संस्कृति पहली बार बिहार ने गत 5 वर्षों में अपनी आंखों से देखा है। टूटी फूटी सड़कों से निजात, आम आदमी में जगता आत्मविश्वास, प्रदेश में कानून व्यवस्था दुरूस्त, संभावनाओं के द्वार खुले, जहरीली राजनीतिक संस्कृति से मुक्ति, पलायन का रूकना, निवेश का आना, बिहार के पुरूषार्थ का जगना, अपराधियों का जेल में जाना और अपराध का रूकना, किसी भी सरकार द्वारा इस तरह पांच वर्षों में तोहफा दिया जाना संभव नहीं। भाजपा और जदयू गठबंधन को बधाई। केन्द्र की यूपीए सरकार ने दी महंगाई, नीतीश ने की जग भलाई। बिहार से आने वाले संदेश में एक ही संवाद है कि दुबारा बन रही नीतीश सरकार है।

6 चरणों में हो रहे चुनाव बिहार के साथ न्याय नहीं हैं। चुनाव की चपेट में दशहरा आ जाए, दिवाली और छठ आ जाए तो क्या इसे इंसाफ कहा जाएगा, चुनाव आयोग की यह नादानी मतों पर असर न डाले, ऐसा इसलिए कहना पड़ रहा है कि भारत में मत देना अनिवार्य नहीं है। काश! अनिवार्य होता तो यह पंक्तियां नहीं लिखी जातीं।

लालूजी की ललकार जब कांग्रेस पर होती है तो लोग हंसते हैं कि यूपीए सरकार को पिछले 5 वर्षों में किसने समर्थन दिया। लालू जी ठंडे हैं। लोकप्रियता इतनी बढ़ गयी है कि वे अब सिर्फ बेटे के सहारे हैं! राबड़ी की तान न तन रही है न लालू का मान बढ़ रहा है। लालू–राबड़ी दोनों सिक्के खोटे साबित हो रहे हैं। इस चुनाव में एक माह से अधिक समय है इसलिए भाजपा–जदयू को भी प्राणपन की बाजी लगानी होगी। वैसे तो रामविलास पासवान लोजपा को लेकर माला जप रहे हैं पर 108 मोतियों की माला एकसूत में पिरा नहीं रही है, बल्कि स्वयं पासवान इधर–उधर लुढ़कते नजर आ रहे हैं। बिहार की जनता की राजनीतिक समझ भी इस बार दांव पर है उसे किस तरह का नाविक चाहिए जो नाव को डूबो दे या नाव को किनारे लगा दे। नाव को किनारे लगाने वाले व्यक्ति का नाम है नीतीश कुमार और सुशील कुमार मोदी। डूबोने वाले का नाम लालू–पासवान–कांग्रेस। देश में बिहार राजनीतिक सूझबूझ में अव्वल रहा है। देश को आशा है कि बिहार विकास–विनाश में अंतर समझेगा और अपना मत उसे ही देगा जिसने बिहार की तकदीर बदली है। ■

संयुक्त संसदीय समिति से जांच हो : गडकरी

हमारे खिलाड़ियों ने हाल ही में सम्पन्न हुए 19वें राष्ट्रमंडल खेलों – दिल्ली 2010 में विभिन्न क्षेत्रों में अपने शानदार प्रदर्शन से भारत को गौरवांवित किया है। खेल संस्कृति पैदा करने की भारत की क्षमता और एक खेल प्रधान देश बनने के बारे में सभी प्रकार की अनिश्चिताएं उस समय समाप्त हो गई जब पदकों की संख्या पहली बार 3 अंकों में पहुंची। उद्घाटन तथा समापन समारोह वास्तव में भव्य थे और इसके साथ–साथ सुरक्षा प्रबंध भी त्रुटिविहीन थे। मैं सभी भारतीय खिलाड़ियों को उनके शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई देता हूं और उन खिलाड़ियों का अभिनंदन करता हूं, जिन्होंने पदक जीते हैं। मैं एथलीटों के विरूद्ध कुछ ग्रुपों द्वारा आतंकी हमले करने की धमकियों की आसूचना रिपोर्टों के बावजूद राष्ट्रमंडल खेलों में पूर्ण सुरक्षा बरतने के लिए सभी सुरक्षा एजेंसियों को सलाम करता हूं। मैं खेलों को पूरी तरह सफल बनाने में भाग लेने वाले कलाकारों, स्कूली बच्चों तथा अन्य सभी व्यक्तियों की भी प्रशंसा करता हूं, जिन्होंने शानदार प्रदर्शन किया है।

बिड जीतने तक सब कुछ ठीक–ठाक प्रतीत होता था। उसके बाद हम कहां असफल हुए और वे सब कौन हैं, जिन्होंने हमें बदनाम किया ? सामान्य रूप से सारा विश्व और विशेष रूप से भारत की जनता यह जानना चाहती है।

भारत ने नवम्बर, 2003 में बिड जीती थी और राष्ट्रमंडल खेल आयोजन समिति बनाने में 16 महीने का समय लगा। इस समिति में राहुल गांधी, कपिल सिब्बल, ज्योतिर्आदित्य सिंधिया, अजय माकन, जितिन प्रसाद और संदीप दीक्षित सहित 35 सदस्य थे।

आधारभूत ढांचा समन्वय समिति की पहली बैठक 15 मार्च, 2005 को दिल्ली में हुई, जिसमें स्टेडियम तथा उनके अपग्रेडेशन और खेल गांव के निर्माण संबंधी आवश्यकताओं पर विचार किया गया और इन सभी कार्यों को अन्तर्राष्ट्रीय मानकों से समझौता किए बिना पूरा करने के लिए सभी सरकारी निकायों जैसे कि शहरी विकास मंत्रालय, दिल्ली विकास प्राधिकरण, दिल्ली सरकार तथा अन्य एजेंसियों को 5 वर्ष से अधिक का समय दिया गया। उनके प्रस्तावों को मंत्रियों के एक ग्रुप द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई और बाद में केन्द्रीय मंत्रिमंडल का अनुसमर्थन प्राप्त हुआ। इन परियोजनाओं के लिए टेंडर मंगाने की प्रक्रिया में अनियमितताएं तथा गड़बड़ी हुई, जिनमें कई हजार करोड़ रूपए की राशि शामिल है।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी द्वारा 19 अक्तूबर, 2010 को जारी प्रेस वक्तव्य

राष्ट्रमंडल खेलों में कदाचारों तथा भ्रष्टाचार संबंधी पहली कहानी का 30 जुलाई, 2010 को पता चला जब यू.के. की एक कम्पनी ए.एम. फिल्मस् ने बिना किसी लिखित करार के भुगतानों का मामला उजागर किया। ऐसा आरोप है कि राष्ट्रमंडल खेल आयोजन समिति ने ए.एम. फिल्मस् जोकि लंदन में एक भारतीय–स्वामित्व वाली फर्म है, को बिना टेंडर मांगे और बिना कागजी कार्यवाही किए गत वर्ष के दौरान क्वीन्स बैटन रिले उद्घाटन समारोह के लिये किए गये कार्यों हेतु 4,50,000 पाउंड से अधिक (30 मिलियन रूपये से अधिक) की राशि का भुगतान किया।

खेलों की विभिन्न परियोजनाओं, जिनमें स्टेडियम तथा अन्य आधारभूत ढांचा शामिल है, के लिए टेंडर देने तथा एअरकंडीशनर, ट्रेडमिल्स और टॉयलेट पेपर जैसे उपकरणों को किराए पर लेने या खरीदने के लिए ठेके देने में भ्रष्टाचार अपनाया गया प्रतीत होता है।

भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक ने खेलों के लिए बनाए जा रहे/नवीकरण किए जा रहे स्टेडियम पर होने वाले व्यय में भारी वृद्धि के बारे में भी प्रतिकूल टिप्पणी की है।

संसद और संसद के बाहर भाजपा नेताओं द्वारा लगाये गए भ्रष्टाचार के

आरोपों और घटिया आधारभूत ढांचे संबंधी आरोपों और मीडिया द्वारा चलाए गए प्रतिकूल अभियान को ध्यान में रखते हुए केन्द्र सरकार ने खेलों में भाग लेने वाले राष्ट्रों को यह आश्वासन दिया है कि 3–14 अक्तूबर के राष्ट्रमंडल खेलों के लिए स्टेडियम पूरे हो जाएंगे।

राष्ट्रमंडल खेल परिसंघ के प्रेसीडेंट माइक फेनल घबराकर दिल्ली पहुंचे और एक प्रेस कांफ्रेस में उन्होंने कहा कि "हम (राष्ट्रमंडल खेल परिसंघ) किसी प्रकार के भ्रष्टाचार को बर्दाश्त नहीं करेंगे। फेनल ने कहा "भ्रष्टाचार की रिपोर्टों की पूर्ण जांच की जानी चाहिए और कानून के अनुसार उन पर कार्यवाही की जानी चाहिए।" फेनल ने खेलों तथा आधारभूत ढांचे के विकास संबंधी मामलों पर अपनी चिंता व्यक्त करने के लिए दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित से भी मुलाकात की।

परंतु कहीं कोई सुधार नहीं हुआ। मुख्य स्थल जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम के बिल्कुल सामने एक निर्माणाधीन पैदल पुल टूटकर गिर गया, जिसमें 27 लोग घायल हो गये और भारोत्तोलन क्षेत्र में एक फाल्स सीलिंग टूट गई। स्थिति से निपटने के लिए सेना की मदद ली गई।

इन सब बातों से उच्चतम न्यायालय ने उत्तेजित होकर टिप्पणी की कि राष्ट्रमंडल खेल परियोजनाओं ने भ्रष्टाचार को जन्म दिया है और वह "व्याप्त भ्रष्टाचार" के प्रति अपनी आँखें बंद नहीं रख सकता और उसने भारत सरकार की अन्तर्राष्ट्रीय खेल कार्यक्रम के लिए उसकी तैयारियों के लिए आलोचना की।

खेलों संबंधी सभी ठेकों के लिए टेंडर मंगाने की प्रक्रिया में धांधली और अनियमितताओं के अनेक आरोप है, जिनकी जांच की जानी चाहिए।

श्रीमती सुषमा स्वराज, श्री अरूण जेटली, श्री कीर्ति आजाद, श्री नवजोत सिंह सिद्धू तथा श्री अनुराग ठाकुर सहित वरिष्ठ भाजपा नेता संसद के दोनों सदनों में ये मामले उठाते रहे। वरिष्ठ भाजपा नेता, श्री विजय कुमार मल्होत्रा, पार्टी के महासचिव, श्री विजय गोयल एवं दिल्ली भाजपा अध्यक्ष, श्री विजेन्द्र गुप्ता तथा खेल प्रकोष्ठ संयोजक, श्री महिन्दर लाल ने दिल्ली में खेलों संबंधी घोटालों के विरूद्ध अभियान चलाया।

भाजपा के इन सभी नेताओं तथा सचिव श्री किरीट सोमैया ने खेलों में कुप्रबंधन के बारे में तथ्य एकत्रित करने के लिए अथक प्रयास किए और ''राष्ट्रमंडल खेलों में लूट संबंधी भाजपा की प्रथम सूचना रिपोर्ट'' तैयार की। इसके साथ उन्होंने एक भारी भरकम अनुबंध भी तैयार किया, जिसमें सरकारी एजेंसियों और खेल निकायों द्वारा कर–दाताओं के धन की पूर्णतया बरबादी के प्रति दिखाई गई बेदर्दी एवं पूर्ण उदासीनता उजागर होती है। इसके परिणामस्वरूप खेल बजट जो शुरू में 2000 करोड़ रूपये का था बढ़कर 70,000 करोड़ रूपये की भारी भरकम राशि का हो गया।

भाजपा की यह पुरजोर मांग है कि ये सभी जांच तथा छानबीन शीघ्रातिशीघ्र पूरी की जानी चाहिए, जिससे किसी तर्क संगत निर्णय पर पहुंचा जा सके ताकि दोषियों को बिना विलंब किए दंडित किया जा सके।

प्रधानमंत्री कार्यालय ने पूर्व सीएजी, श्री बी.के. शुंगलु की अध्यक्षता में एक जांच समिति बनाई है। अनेक सरकारी एजेंसियों को जैसे प्रवर्तन निदेशालय, मुख्य सर्तकता आयुक्त, सीएजी, केन्द्रीय जांच ब्यूरो, राजस्व आसूचना, तथा अन्य एजेंसियां, भ्रष्टाचार, अनियमितताओं तथा कदाचारों आदि को विशिष्ट आरोपों की अपनी–अपनी जांच करने के लिए इसमें शामिल किया गया है।

अब शीला दीक्षित, सुरेश कलमाडी तथा अन्य लोगों द्वारा राष्ट्रमंडल खेलों के बारे में खुले में कीचड़ उछाला जा रहा है, जहां कलमाडी न केवल राष्ट्रमंडल खेल आयोजन समिति के 1620 करोड़ रूपये के बजट की जांच की मांग कर रहे हैं बल्कि दिल्ली सरकार के 16,000 करोड़ रूपये के बजट की जांच की भी मांग कर रहे हैं।

भाजपा की यह पुरजोर मांग है कि ये सभी जांच तथा छानबीन शीघ्रातिशीघ्र पूरी की जानी चाहिए, जिससे किसी तर्क संगत निर्णय पर पहुंचा जा सके ताकि दोषियों को बिना विलंब किए दंडित किया जा सके।

इस कार्य में अनेक एजेंसियों के शामिल होने की बात को ध्यान में रखते हुए हम मांग करते हैं कि मंत्रिमंडल सचिव की अध्यक्षता में एक उच्च शक्ति प्राप्त समन्वय समिति गठित की जाए ताकि घोटालों का पता लगाने के लिए प्रभावी और समेकित प्रयास सुनिश्चित किये जा सके।

इन सभी प्रकार की जांचों के माध्यम से यह पता लगाया जाना चाहिए कि विभिन्न सौदों में कितना और किस प्रकार का भ्रष्टाचार हुआ और इनमें शामिल एजेंसियों ने क्या भूमिका अदा की ताकि दोषी पाये गए व्यक्तियों के विरूद्ध उचित कानूनी कार्यवाही की जा सके।

भाजपा सभी जांच एजेंसियों को

पूरा सहयोग प्रदान करेगी और भ्रष्टाचार और धांधली के सभी आरोपों की निष्पक्ष एवं अर्थपूर्ण जांच करने में इसके नेताओं द्वारा एकत्रित सूचना उपलब्ध कराएगी।

परन्तु इसके साथ–साथ मैं यह महसूस करता हूं कि शीघ्र ही उन लोगों की जिम्मेदारी निर्धारित की जाये, जिन्होंने इन परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की और जिन्होंने परियोजना प्रतिवेदनों में गंभीर त्रुटियों को अनदेखा करते हुए समय–समय पर निधियों का आवंटन किया और जो इन परियोजनाओं की अनुचित भारी लागत वृद्धि के लिए उत्तरदायी है।

अब समय आ गया है कि राष्ट्रमंडल खेलों में लूट में शामिल भागीदारों तथा इस गड़बड़ी को अनदेखा करके उन्हें राजनीतिक संरक्षण प्रदान करने वालों के बीच सांठ–गांठ का पर्दाफाश किया जाए।

भारत के लोगों को यह जानने का पूरा संवैधानिक हक है कि इस राष्ट्रीय बदनामी के लिए असली अपराधी कौन है।

सच्चाई तभी समाने आएगी जब एक खुली विस्तृत जांच कराई जाए और वह एक संयुक्त संसदीय जांच के माध्यम से ही हो सकता है।

भाजपा मांग करती है कि राष्ट्रमंडल खेलों में करोड़ों की लूट संबंधी इस महत्वपूर्ण घोटाले की जांच शीघ्रातिशीघ्र एक संयुक्त संसदीय समिति गठित करके कराई जाए।

प्रस्तावित संयुक्त संसदीय समिति के निर्देश पदों में अन्य बातों के साथ–साथ एक ऐसे त्रुटिविहीन तंत्र का बनाया जाना शामिल होना चाहिए, जिससे भविष्य में भ्रष्टाचार तथा घोटाला मुक्त अन्तर्राष्ट्रीय खेल कार्यक्रम आयोजित करने में पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित की जा सके। ■

नई दिल्ली में 'राष्ट्रऋषि नानाजी' ग्रंथ लोकार्पित

नानाजी जीवनपर्यंत सेवा के पथ पर चलते रहे : लालकृष्ण आडवाणी

गत 10 अक्तूबर को नई दिल्ली स्थित दीनदयाल शोध संस्थान में आयोजित एक कार्यक्रम में 'राष्ट्रऋषि नानाजी' ग्रंथ का लोकार्पण हुआ। लोकार्पणकर्ता थे वरिष्ठ भाजपा नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी। पथ अपनाया और जीवनपर्यंत उसी पथ के पथिक रहे। श्री आडवाणी ने कहा कि नानाजी के कार्यों को हम जितना प्रचारित–प्रसारित कर पाएंगे उतनी ही सेवा देश और देशवासियों की कर पाएंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता की रा.स्व.संघ, उत्तर क्षेत्र संघचालक डा. बजरंग लाल गुप्त ने, जबकि विशेष अतिथि के रूप में मध्य प्रदेश के संस्कृति, जनसम्पर्क एवं उच्च शिक्षा मंत्री श्री लक्ष्मीकांत शर्मा उपस्थित थे।

समारोह को संबोधित करते हुए श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि दीनदयाल जी एवं नानाजी जैसे लोग बहुत ही कम होते हैं। इन दोनों ने कभी अपने बारे में नहीं सोचा। दिन–रात राष्ट्र के लिए सोचा, राष्ट्र के लिए कार्य किया और असंख्य कार्यकर्ताओं को गढ़ा। वे कार्यकर्ताओं के लिए आदर्श थे। श्री आडवाणी ने कहा कि 1977 में मोरारजी देसाई की सरकार में नानाजी को मंत्री बनाने की घोषणा हुई, किंतु उन्होंने बड़ी विनम्रता से मंत्रिपद लेने से मना कर दिया। आज ऐसा कौन कर सकता है? उन्होंने कहा कि नानाजी ने राजनीति से उस समय संन्यास लिया जब उनका राजनीतिक जीवन शिखर पर था। इसके बाद उन्होंने सेवा का

डा. बजरंग लाल गुप्त ने कहा कि नानाजी ने अपना पूरा जीवन और रक्त की एक–एक बूंद देश की सेवा में लगाई। उनके प्रयोगों के आधार पर देश में विकास का एक नया मॉडल बनना चाहिए। श्री लक्ष्मीकांत शर्मा ने कहा कि नानाजी के कार्य अनुकरणीय हैं। इस्कॉन मन्दिर के निदेशक श्री महामंत दास ने नानाजी के बताए मार्ग पर चलकर देश–सेवा करने की बात कही। दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र जीत सिंह ने ग्रंथ के बारे में बताते हुए कहा कि इसमें 15 सोपान एवं 14 पत्र संकलित हैं।

धन्यवाद ज्ञापन श्री यादवराव जोशी ने किया। समारोह में पूर्व राज्यपाल श्री केदारनाथ साहनी, वरिष्ठ चिंतक श्री के.एन. गोविंदाचार्य, दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री श्री मदनलाल खुराना, वरिष्ठ स्तंभकार श्री देवेन्द्र स्वरूप एवं रा.स्व. संघ, दिल्ली के प्रांत संघचालक श्री रमेश प्रकाश सहित बड़ी संख्या में गणमान्यजन उपस्थित थे। ■

मुख्यमंत्री येदियुरप्पा ने दोबारा हासिल किया विश्वास मत

कर्नाटक यानी दक्षिण में भाजपा की सरकार' कांग्रेस इसे बर्दाश्त नहीं कर पा रही है। कांग्रेस और जद–एस 'धनबल' से राज्य सरकार को अस्थिर करने में जुटी है। कांग्रेस अपने एजेंट राज्यपाल हंसराज भारद्वाज का इस्तेमाल कर एक लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित सरकार को अपदस्थ करने की कोशिश कर रही है। पिछले दिनों राज्यपाल ने विधानसभा अध्यक्ष को चुनौती देते हुए केन्द्र को सुझाव दिया था कि वह राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाये, लेकिन कर्नाटक विधानसभा में भाजपा ने दोबारा बहुमत हासिल करके यह साबित कर दिया कि उसके पास राज्य विधानसभा में बहुमत है। 14 अक्तूबर 2010 को कर्नाटक विधानसभा में मुख्यमंत्री बीएस येदियुरप्पा के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने विश्वास मत जीत लिया। चार दिनों के भीतर दूसरी बार सदन में शक्ति परीक्षण का सामना कर रही भाजपा सरकार के विश्वास मत प्रस्ताव के समर्थन में 106 और विरोध में 100 मत पड़े।

भाजपा को प्रभावी 206 सदस्यीय सदन में अपने 105 विधायक और एक निर्दलीय का समर्थन मिला। सदन में कांग्रेस के 73 और जद–एस के 27 सदस्य हैं। सदन की कार्यवाही सुचारू रूप से चली तथा सदस्यों की संख्या गिनकर मत विभाजन किया गया। इससे पहले हुए शक्ति परीक्षण में विश्वास मत को ध्वनिमत से पारित करने की घोषणा की गयी थी। मतदान के समय दो विधायक, भाजपा के एम वाजल और जद–एस के एमसी अश्वथ अनुपस्थित थे। इसके कारण 224 सदस्यीय विधानसभा की प्रभावी संख्या 206 रह गयी थी। विधानसभा अध्यक्ष ने विश्वास मत से पहले 16 विधायकों को दल–बदल कानून के तहत अयोग्य घोषित किया था। इनमें भाजपा के 11 विधायक और पांच निर्दलीय शामिल थे। विदित हो कि येदियुरप्पा सरकार को सदन में दूसरी बार शक्ति परीक्षण के लिए मजबूर होना पड़ा क्योंकि राज्यपाल हंसराज भारद्वाज ने पूर्व में हुए मतदान को ''तमाशा'' कहकर खारिज कर दिया और दोबारा सदन में शक्ति परीक्षण का मौका दिया। भाजपा ने राज्यपाल के इस निर्देश को स्वीकार कर लिया। ■

अलोकतांत्रिक रवैया न अपनाए केन्द्र सरकार : गडकरी

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने कहा कि कांग्रेस और जद (एस) के पक्षपातपूर्ण और असंवैधानिक रवैये के बावजूद भारतीय जनता पार्टी ने कर्नाटक विधानसभा में अपना पूर्ण बहुमत साबित कर यह स्पष्ट कर दिखाया कि लोकतांत्रिक तरीके से चुनी गई सरकार के खिलाफ यदि कोई अलोकतांत्रिक कदम उठाया जाएगा तो उसका हश्र ऐसा ही होगा। यह केवल भाजपा की ही नहीं वरन संपूर्ण कर्नाटक राज्य की जनता की जीत है। कर्नाटक में कांग्रेस और जद (एस) ने जिस प्रकार विधायकों की खरीद–फरोख्त के लिए धन–बल और बाहु–बल का इस्तेमाल कर भाजपा सरकार को गिराने की कोशिश की वह लोकतंत्र की हत्या करने का ही कुप्रयास था जिसका मुंहतोड़ जवाब वहां भाजपा ने दिया। केंद्र सरकार के इशारे पर कर्नाटक के राज्यपाल हंसराज भारद्वाज ने जो असंवैधानिक रवैये अपनाया था, वह पूरी तरह से अनुचित था।

राज्यपाल को तुरंत वापस बुलाया जाए : सुषमा स्वराज

लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि भाजपा कर्नाटक के राज्यपाल श्री एच.आर. भारद्वाज द्वारा माननीय अध्यक्ष को लिखे गये पत्र को स्वर, भावार्थ, और इबारत से साफ है कि राज्यपाल विधायी प्रक्रिया में बाधा डालने पर उतारू हैं और वह अध्यक्ष के संवैधानिक कामकाज पर अध्यक्ष के अधिकारों का अतिलंघन करना चाहते हैं। राज्यपाल कर्नाटक राज्य में संवैधानिक शासन में पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर काम कर रहे हैं और भाजपा ने इस बात को स्पष्ट रूप से उनकी राजनैतिक पक्षपातपूर्ण नीति के बारे में बार–बार कहा है। भाजपा ने भारत की महामहिम राष्ट्रपति से अपील की है कि वे तुरंत ही श्री एच.आर. भारद्वाज को वापस बुला लें जिन्होंने राष्ट्रपति द्वारा इस पद पर नियुक्ति के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह न करने पर अपने वैधानिक एवं नीतिगत अधिकार खो दिए हैं। कर्नाटक राज्य में राज्यपाल को वापस बुलाए बिना वहां के संवैधानिक शासन की बहाली नहीं हो पाएगी।

कर्नाटक राज्यपाल को वापस बुलाएं प्रधानमंत्री : भाजपा

दिनांक : अक्तूबर 13, 2010

'कर्नाटक सरकार को अस्थिर करने' के मुद्दे पर भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी के नेतृत्व में पार्टी के एक प्रतिनिधिमंडल ने प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में कहा गया है कि गत कुछ सप्ताहों में घटित घटनाओं से यह स्पष्ट हो गया है कि राज्यपाल के संवैधानिक पद पर अपनी नियुक्ति के बावजूद, श्री भारद्वाज अपने राजनीतिक अतीत से राजनीतिक रूप से अपने–आप को दूर करने में पूरी तरह से विफल रहे हैं और उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि वह अपने उच्च संवैधानिक पद के लिये बिल्कुल योग्य नहीं है। वह संविधानेतर कार्यों को अंजाम दे रहे हैं। इसलिए राज्यपाल हंसराज भारद्वाज को वापस बुलाया जाये। हम ज्ञापन का पूरा पाठ यहां प्रकाशित कर रहे हैं:–

प्रिय प्रधानमंत्री जी,

भारतीय जनता पार्टी की ओर से हम कर्नाटक के राज्यपाल, श्री एच.आर. भारद्वाज को वापस बुलाये जाने की मांग करते हैं। गत कुछ सप्ताहों में घटित घटनाओं से यह स्पष्ट हो गया है कि राज्यपाल के संवैधानिक पद पर अपनी नियुक्ति के बावजूद, श्री भारद्वाज अपने राजनीतिक अतीत से राजनीतिक रूप से अपने–आप को दूर करने में पूरी तरह से विफल रहे हैं और उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि वह अपने उच्च संवैधानिक पद के लिये बिल्कुल योग्य नहीं है। जब वह राज्यपाल नियुक्त किये गए थे उस समय भी उनकी नियुक्ति विश्वास प्रेरक नहीं थी। विगत में मंत्री पद धारण करने के बावजूद भी उन्होंने लोकतांत्रिक तथा संवैधानिक संस्थानों का कभी भी आदर नहीं किया। वह संविधानेतरवाद में दृढ़ विश्वास रखते थे और अपनी वफादारी दिखाने के लिये संविधानेतरवाद का इस्तेमाल उनकी सदैव राजनीतिक रणनीति रही।

राज्यपाल नियुक्त होने के बाद उन्होंने अपने आप को मंत्रियों सहित राज्य के राजनीतिक नेताओं के साथ विवादों में लिप्त कर लिया। राजभवन में कांग्रेस पार्टी, जेडी(एस) के राजनेता और कुछ विशिष्ट व्यवसायी, जिनमें वे लोग भी शामिल थे, जो राज्य सरकार की नीतियों से परेशान थे, आ–जा सकते थे। राज्य सरकार और उनके मंत्रियों के साथ उनकी खुली नोंक–झोंक को उनके पद की गरिमा के अनुरूप नहीं समझा गया, फिर भी अनेक लोगों ने आलोचना के बावजूद इसकी परवाह नहीं की। तथापि, उनके अनियंत्रित स्वभाव के कारण हाल के सप्ताहों में उन्होंने राजभवन को विधायकों की खरीद–फरोख्त को बढ़ावा देने तथा राज्य सरकार को अस्थिर बनाने के लिए राजनीतिक षड्यंत्र का अखाड़ा बना दिया।

राजनीतिक प्रयोजनों के लिये राज्यपाल के पद के उपयोग को अनुमति देने के बाद अब उन्होंने राज्य के अन्य संवैधानिक प्राधिकरणों के साथ राजनीतिक झगड़ा करना आरम्भ कर दिया। जब श्री बी.एस. येद्दुरप्पा के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार से विधानसभा के कुछ सदस्यों ने समर्थन वापस लिया तो राज्यपाल ने मुख्यमंत्री को विश्वासमत लेने के लिये कहा। उन्होंने उसके साथ–साथ अध्यक्ष को भी दसवीं अनुसूची के अन्तर्गत अपनी शक्तियां प्रयोग न करने एवं दल–बदल करने वाले किसी विधायक को अयोग्य करार न देने के लिये भी पत्र लिख भेजा। किसी राजनीतिक दल के चुनाव चिन्ह पर विधानसभा को कोई भी निर्वाचित सदस्य यदि दल की सदस्यता छोड़ता है तो उसे अयोग्य करार दिया जा सकता है।

भाजपा सरकार से समर्थन वापस लेने मात्र से इन विधायकों ने उस राजनीतिक दल की सदस्यता छोड़ दी, जिसके चुनाव चिह्न पर वे निर्वाचित हुए थे। इसी तरह कुछ स्वतंत्र सदस्यों ने एक राजनीतिक दल की सदस्यता हासिल कर ली और इस तरह उन्होंने अपना स्वतंत्र सदस्य का स्वरूप खो दिया। वे भी अयोग्य ठहराये जा सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों को तुरंत प्रभाव से अयोग्य ठहराना अध्यक्ष का कर्तवय है। तथापि, राज्यपाल ने अध्यक्ष को पत्र लिखा कि वह दसवीं अनुसूची के अन्तर्गत अपनी शक्तियों का प्रयोग न करें, विधानसभा के अध्यक्ष को राज्यपाल द्वारा दिया गया कोई भी परामर्श संविधान के विरूद्ध नहीं होना चाहिए। उन्होंने अध्यक्ष को यह भी चेतावनी दी कि यदि उन्होंने दसवीं अनुसूची के अन्तर्गत अपनी शक्तियों का प्रयोग किया तो विधानसभा का निर्णय मान्य नहीं होगा। वह राज्य सरकार को अस्थिर बनाने के लिए पहले से सोची–समझी रणनीति के तहत कार्य कर रहे थे।

कांग्रेस और जेडी(एस) द्वारा अपनाई गई रणनीति स्पष्टतया गड़बड़ी पैदा करना था ताकि सदन में विश्वास मत न लिया जा सके। जब प्रस्ताव मौखिक मतदान से स्वीकृत हुआ क्योंकि मत–विभाजन की किसी ने मांग नहीं की, तो राज्यपाल ने अब अपनी चाल के अनुसार केन्द्र सरकार को एक रिपोर्ट भेजी, जिसमें संविधान के अनुच्छेद 356 के अधीन कार्यवाही किये जाने की सिफारिश की। उनकी सिफारिश गलत तथा किसी अन्य अभिप्राय से प्रेरित थी। विधानसभा के 105 सदस्यों ने प्रस्ताव का समर्थन किया जो सदन में उपस्थित सदस्यों में बहुमत में थे। फिर भी, राज्यपाल ने राष्ट्रपति शासन की सिफारिश करना उचित समझा।

क्या संविधानेतर कार्यों को तरजीह देने वाले और संयम न बरतने वाले व्यक्तियों को राज्यपाल नियुक्त किया जाना चाहिए या उन्हें पद पर बने रहना देना चाहिये। हम आपसे मांग करते हैं कि कर्नाटक के राज्यपाल श्री हंसराज भारद्वाज को वापस बुलाया जाये। उनका पद पर बने रहना उस उच्च संवैधानिक पद की संवैधानिक आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है।

राष्ट्रपति शासन की सिफारिश करने के 24 घंटों के भीतर ही वह अपनी बात से पलट गये और पहले वाले मतदान को एक दिखावा बताते हुए मुख्यमंत्री को 14 अक्तूबर, 2010 को नये सिरे से विश्वास मत लेने के लिए कहा। यदि अनुच्छेद 356 के अधीन राष्ट्रपति शासन लगाने की सिफारिश सही कारणों पर आधारित थी तो वह एक दिन में ही अपनी बात से क्यों पलट गये ? यद्यपि मुख्यमंत्री एक संवैधानिक प्राधिकरण के साथ अनावश्यक झगड़े से बचने के लिए राज्यपाल की सिफारिश से सहमत हो गये तथापि क्या राज्यपाल तीन दिन के भीतर दूसरा विश्वासमत लेने के लिये कह सकता है ? वह राज्य सरकार और भाजपा के विरूद्ध आधारहीन आरोप लगाने और खुले तौर पर उन्हें दोषी ठहराने की अपनी बात को मुख्यमंत्री के प्रति उदारता दर्शाना बता रहे हैं। किसी संवैधानिक प्राधिकरण में आवश्यक शिष्टाचार और संयम की पूर्ण कमी है।

राज्यपाल श्री हंसराज भारद्वाज द्वारा अपनाये गये अनेक संविधानेतर कार्यों से वह महत्वपूर्ण संविधानिक पद धारण करने के योग्य नहीं है। संवैधानिक कर्तव्य निभाने के लिए संयम तथा परम्परा जरूरी है न कि झगड़ा।

अतः हम बाध्य होकर आपसे अनुरोध करते है कि आप इस बात पर गंभीरता से विचार करें कि क्या संविधानेतर कार्यों को तरजीह देने वाले और संयम न बरतने वाले व्यक्तियों को राज्यपाल नियुक्त किया जाना चाहिए या उन्हें पद पर बने रहना देना चाहिये। हम आपसे मांग करते हैं कि कर्नाटक के राज्यपाल श्री हंसराज भारद्वाज को वापस बुलाया जाये। उनका पद पर बने रहना उस उच्च संवैधानिक पद की संवैधानिक आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है।

लालकृष्ण आडवाणी	**सुषमा स्वराज**	**अरुण जेटली**	**वेंकैया नायडू**
अध्यक्ष	विपक्ष की नेता	विपक्ष के नेता	पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

एक अक्षम्य भूल

& ykyÑ".k vkMok.kh

जम्मू एवं कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने वाकई इतिहास रच डाला है। जम्मू एवं कश्मीर के किसी अन्य मुख्यमंत्री ने कभी इसका प्रतिवाद नहीं किया कि जम्मू एवं कश्मीर राज्य भारत का अभिन्न अंग है। ऐसा करके उमर ने न केवल भाजपा को चिढ़ाया है अपितु आगे बढ़कर जो कहा है उससे राज्य में अलगाववादी और पाकिस्तान का मीडिया हर्षोन्माद में है। राज्य विधानसभा में एक ताजा वक्तव्य में, उमर ने कहा: जम्मू एवं कश्मीर राज्य भारत के साथ जुड़ा है, इसका भारत के साथ 'विलय' नहीं हुआ है।

तथ्य यह है कि 500 से ज्यादा रियायतें जिनमें हैदराबाद और जूनागढ़ शामिल है जिनका विशेष रुप से उल्लेख करते हुए उमर ने इसे जम्मू–कश्मीर से भिन्न केस बताया है– ने उसी तरह विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए जैसे कि जम्मू एवं कश्मीर ने किए हैं, और स्वतंत्रता के बाद भारत अखण्ड हिस्सा बने। और पिछले 6 दशकों से ज्यादा समय से न केवल अकेली भाजपा जम्मू एवं कश्मीर को भारतीय क्षेत्र का अभिन्न अंग बताती है अपितु देश के प्रत्येक नेता पंडित नेहरु से लेकर श्रीमती इंदिरा गांधी से वर्तमान विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा भी इसकी पुष्टि करते रहे हैं।

वास्तव में पाकिस्तान के समाचार पत्र 'डान' के 8 अक्टूबर के मुख्य पृष्ठ पर एस.एम. कृष्णा के दावे को विधानसभा में उमर के भाषण के सामने प्रकाशित किया है। 1994 में भारतीय संसद के दोनों सदनों द्वारा जम्मू–कश्मीर पर पारित सर्वसम्मत प्रस्ताव को यहां स्मरण करना समीचीन होगा, जिसमें दृढ़तापूर्वक कहा गया है:

"जम्मू एवं कश्मीर राज्य भारत का अभिन्न अंग रहा है, और रहेगा तथा शेष भारत से इसे अलग करने के लिए किसी भी प्रयासों का सभी आवश्यक साधनों से प्रतिरोध किया जाएगा।"

;gh çLrko vkx dgrk g%

"पाकिस्तान को भारत राज्य के जम्मू एवं कश्मीर का क्षेत्र खाली करना चाहिए जिसे उसने बलात हथिया रखा है।"

vHkh rd mej vCnqYyk d R;kxi= dh ekx bl vkèkkj ij dh tk jgh Fkh fd og iRFkj Qjdu okyh HkhM }kjk ?kkVh e ink fd, x, gkykr l fuiVu e vlQy jg gA dN rRo bl mudh ç'kklfud vuHkoghurk ekur FkA ijUrq mud rkt c;ku l lkQ gkrk g fd ;g mudh ek= ç'kklfud vuHkoghurk ugh g vfir tgk rd tEe ,o d'ehj dk lEcUèk g] og jk"Vªh; eM l ijh rjg vyx gA blfy, ftruk tYnh o R;kxi= n n rk mruk gh tEe ,o d'ehj vkj jk"Vª d fy, vPNk gkxkA

विधानसभा के अपने भाषण में उमर अब्दुल्ला ने धारा 370 को समाप्त करने की भाजपा की मांग का आलोचनात्मक संदर्भ दिया। डा. श्यामा

जीवेम शरदः शतम्

tUe fnol % 8 uoEcj

भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी के जन्म दिवस के अवसर पर पार्टी के सभी नेता और कार्यकर्ता उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं अर्पित करते हैं। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी, लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज, राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरूण जेटली, पूर्व भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मुरली मनोहर जोशी, श्री एम वेंकैया नायडू और श्री राजनाथ सिंह, राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) श्री रामलाल एवं कमल संदेश के सम्पादक श्री प्रभात झा सहित अन्य सभी नेतागण एवं कार्यकर्ता श्री लालकृष्ण आडवाणी की दीर्घायु की कामना करते हुए अभिलाषा रखते हैं कि वे चिरकाल तक पार्टी एवं राष्ट्र का मार्गदर्शन करते रहें।

प्रसाद मुकर्जी के दिनों से हम एक प्रधान, एक निशान और एक विधान के लिए कटिबद्ध रहे हैं।

डा. मुकर्जी द्वारा शुरू किए गए कश्मीर आंदोलन और बंदी अवस्था में उनकी मृत्यु से पहले दो लक्ष्य–एक प्रधान और एक निशान तो हासिल हो गए। तीसरा लक्ष्य एक संविधान–हासिल होना शेष है। और हम उसे हासिल करने के लिए कृतसंकल्प हैं।

बहुतों को यह नहीं पता होगा कि धारा 370 के कारण जम्मू एवं कश्मीर राज्य के पृथक संविधान की धारा 3 इस तरह है–

राज्य का भारत संघ के साथ सम्बन्ध– जम्मू एवं कश्मीर भारत संघ का अभिन्न अंग है और रहेगा।

भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति ए.एस. आनन्द ने अपनी पुस्तक द कांस्टीटयूशन ऑफ जम्मू एण्ड कश्मीर में उपरोक्त भाग पर निम्न टिप्पणी की है।

1951 में राज्य संविधान सभा आहूत की गई थी ताकि वह "राज्य के जुड़ने के सम्बन्ध में अपने तर्कसंगत निष्कर्ष" दे सके। संयुक्त राष्ट्र संघ में कश्मीर सम्बन्धी विवाद पर ठहराव आ चुका था।

राज्य के भविष्य के बारे में अनिश्चितता समाप्त करने के उद्देश्य से कश्मीर में असेम्बली ने पर्याप्त विचार–विमर्श के बाद 1954 में राज्य के भारत में विलय की पुष्टि की।

1956 में, जब राज्य संविधान की ड्राटिग को अंतिम रुप दिया जा रहा था, तक राज्य संविधान में राज्य के विलय को एक 'स्थायी प्रावधान' मानने के सम्बन्ध में राज्य की अंततः स्थिति को शामिल करना जरुरी समझा गया। यही वह विचार था जो संविधान के भाग 3 के रुप में अपनाया गया।

इस भाग में शब्द प्रयोग में लाए गए "हैं–और रहेगा" । इससे साफ होता है कि राज्य के लोगों के मन में भारत के साथ जुड़ने के बारे में कभी कोई शक नहीं था। यह भाग मात्र उनकी इच्छा कि "भारत संघ के अभिन्न अंग" बने रहने की पुष्टि भर है।

तब क्यों, मि. उमर, आप भाजपा के यह कहने पर नाराज होते हो?

२ जी स्पेक्ट्रम घोटाला

पिछले सप्ताह समाचार पत्रों की यह दो सुर्खियां थीः

"राजा इगर्नोड पीएम, लॉ मिनिस्ट्रीज एडवाइस आन 2जी स्पेक्ट्रम, सेस सीएजी"

(राजा ने 2 जी स्पेक्ट्रम पर प्रधानमंत्री, विधि मंत्रालय के परामर्श की उपेक्षा की, सीएजी का कहना है)

"नथिंग मूव्स विदआउट मनी, सेस एक्सपर्ट"

(बगैर पैसे के कुछ भी नहीं हिलता, विशेषज्ञो का कहना है)

nkuk lf[k;k Hk"Vkpkj lEcUèkh lekpkjk l tMh g&igyh e ,d dæh; e=h 'kkfey g] vkj nljh dæ ljdkj e 0;klr Hk;dj Hk"Vkpkj ij lokPp U;k;ky; }kjk dh xbl dMh funk dk lkj gA

fu;=d ,o egky[kk ijh{kd u crk;k fd ,- jktk dh Vyhd,e fefuLVh u 2008 e lep LiDVe vkoVu e fofèk e=ky;] foÙk e=ky; vkj ;gk rd fd çèkkue=h dh lykg dk utj vnkt djr g, ßeueku <xß l dke fd;kA

सी.ए.जी. के अनुमान से इस मनमाने दृष्टिकोण से देश को 1.40 लाख करोड़ रुपए की विशाल धनराशि का नुक्सान उठाना पड़ा है! सी.ए.जी. के अनुमान से यह स्पेक्ट्रम घोटाला आजादी के बाद से सर्वाधिक बड़ा घोटाला बनता है।

सी.ए.जी. रिपोर्ट कहती है:

"टेलीकॉम मंत्रालय ने स्पष्ट और तार्किक या मान्य कारणों के बिना वित्त और विधि मंत्रालय की सलाह को उपेक्षित किया, 2जी स्पेक्ट्रम जैसी दुर्लभ परिमित राष्ट्रीय सम्पदा को आवंटित करने हेतु टेलीकॉम आयोग के विचार–विमर्श को नकारा।"

"स्पेक्ट्रम की कमी और वाजिब से कम दाम के बारे में सभी एजेंसियों की जानकारी के बावजूद, लाइसेंस जारी करने का प्रवेश शुल्क 2001 में निर्धारित की गई दरों से बंधा हुआ रखा गया।"

सीएजी ने टेलीकॉम मंत्रालय के इस तर्क को खारिज कर दिया कि स्पेक्ट्रम आवंटन पिछली सरकार द्वारा निर्धारित की गई नीति के अनुसार ही किया गया है। सीएजी कहता है कि "यह दावा गलत है कि पूर्ववर्ती सरकार की नीति का पालन किया गया। सन् 2003 में केबिनेट ने भविष्य में सभी आवंटनों को सीधे नीलामी से करने का निर्देश दिया था।"

जहां तक दूसरे समाचार का संबंध है उसमें पहले जैसे की भांति किसी बड़े राजनीतिज्ञ के शामिल होने का मामला नहीं है, लेकिन फिर भी यह एक मध्यवर्ती सरकारी अधिकारी से सम्बन्धित है, सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणियां दर्शाती हैं कि बार–बार भ्रष्टाचार के केसों के मामले में देश का सर्वोच्च न्यायालय कैसे क्रोधित और उत्तेजित है।

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति मार्कण्डय काटजू और टी.एस. ठाकुर की पीठ कहती है :

"यहां अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है कि देश में भ्रष्टाचार पर कोई नियंत्रण नहीं है। विशेष रुप से आयकर, बिक्री कर और आबकारी विभागों में भ्रष्टाचार काबू से बाहर है। बगैर पैसे के कुछ भी नहीं हिलता।"

स्पष्ट कटाक्ष करते हुए पीठ ने आगे कहाः "क्यों नहीं सरकार भ्रष्टाचार को वैध बना देती जिससे प्रत्येक केस के लिए एक विशेष राशि निर्धारित हो जाएगी। मान लीजिए यदि एक व्यक्ति अपने मामले को सुलझाना चाहता है तो उसे 2,500 रुपए भुगतान करने को कहा जाए।" उससे प्रत्येक व्यक्ति को पता चल सकेगा कि उसे कितनी रिश्वत देनी है।

राष्ट्रमंडल खेल : दोषी नहीं बख्शा जाए

यह अत्यंत संतोषजनक है कि नई दिल्ली में राष्ट्रमण्डल खेलों की समाप्ति के बाद ही प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने खेलों से जुड़े भ्रष्टाचार और विभिन्न कुप्रबन्धन के आरोपों की जांच की घोषणा की है।

देश को आशा है कि आद्योपांत जांच होगी और गलत काम करने वाला कोई भी बख्शा नहीं जाएगा। और केवल बलि का बकरा ढूढने की खोज नहीं होगी।

देश के भीतर के प्रेक्षकों को भारतीय खिलाड़ियों द्वारा बड़ी मात्रा में पदक जीतने, और उद्घाटन तथा समापन के अवसर पर भव्य कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन से, महीनों से नकारात्मक प्रचार पा रहे राष्ट्रमण्डल खेलों के लिए कुछ हद तक क्षतिपूर्ति करने वाली हैं। लेकिन भारत के बाहर रहने वाले भारतीयों की बात मानी जाए तो विदेशों में इसका प्रचार नकारात्मक ही रहा है।

हालांकि, यह एक सुखद संयोग है कि राष्ट्रमण्डल खेलों के अंतिम दिन ने भारत को आस्ट्रेलिया के बाद दूसरे स्थान पर स्थापित किया है, इसके साथ–साथ क्रिकेट में भारत को तीन विजय मिलीं: (1) 2 मैच वाली श्रृंखला में आस्ट्रेलिया के ऊपर विजय, (2) दुनिया की क्रिकेट टीमों में भारत का पहले स्थान पर पहुंचना और (3) सचिन तेदुंलकर का लाजवाब प्रदर्शन। सभी खेलप्रेमियों को स्वाभाविक रुप से उस दिन गर्व महसूस हुआ होगा। ■

विजयादशमी के अवसर पर भाजपा ने की राष्ट्रमंडल खेलों में लिप्त भ्रष्टाचारियों के पुतले जलाकर जन आन्दोलन की शुरूआत

भाजपा दिल्ली प्रदेश ने राष्ट्रमंडल खेलों में भारी भ्रष्टाचार करने वाले नेताओं शीला दीक्षित, सुरेश कलमाड़ी, खेल मंत्री मनोहर सिंह गिल का 17 अक्टूबर को चांदनी चौक घंटाघर पर पुतला दहन किया। इस अवसर पर भाजपा के अनेक नेता, कार्यकर्ता तथा चांदनी चौक के क्षेत्रीय नागरिक इकट्ठा हुए। दिल्ली भाजपा ने अन्य सभी भ्रष्टाचारियों को तुरन्त कठोर दंड देने की मांग की।

इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता ने उपस्थित लोगों के बीच में कहा कि खेलों में हजारों करोड़ रूपये का खुला भ्रष्टाचार करने वाली शीला दीक्षित अब सारा दोष अन्य लोगों पर मढ़कर अब स्वयं बच निकलना चाहती है। लेकिन उनके इन प्रयासों को भाजपा सफल नहीं होने देगी तथा जनता की गाढ़ी कमाई के एक एक पैसे का हिसाब मुख्यमंत्री शीला दीक्षित समेत अन्य लोगों को देना होगा। उन्होंने कहा कि लगभग 700 करोड़ रूपये अनुसूचित जाति कल्याण फंड का सीधा दुरूपयोग मुख्यमंत्री ने खेलों के नाम पर किया है। श्री गुप्ता ने कहा कि खेलों के ठीक पहले जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम के बाहर बना फूटओवर ब्रिज गिरा था, उसकी जांच रिपोर्ट 2 दिन में आनी थी, लेकिन आज तक उस रिपोर्ट को क्यों दबाया जा रहा है? उन्होंने मांग की कि फूटओवर ब्रिज की गिरने की जांच रिपोर्ट तुरन्त सार्वजनिक करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि दिल्ली की मुख्यमंत्री को जनता की अदालत में आ कर सफाई देनी होगी और अपना अपराध स्वीकार्य करते हुये उन्हें तुरन्त त्यागपत्र दे देना चाहिए।

श्री गुप्ता ने यह भी कहा कि खजाने से खर्च की गई रकम की भरपाई के लिए शीला दीक्षित ने रजिस्ट्री फीस और सर्कल रेट में भारी वृद्धि की है जो एक जनविरोधी निर्णय है और भी कई प्रकार से इस खर्च का भार जनता पर ही डाला जा रहा है। भाजपा इसका पुरजोर विरोध करेगी। इस अवसर पर चांदनी चौक के प्रमुख व्यापारी संगठन, निगम पार्षद सुमन गुप्ता, अशोक अग्रवाल, संजय गौतम, मंडल एवं जिला चांदनी चौक के वरिष्ठ नेता उपस्थित थे। ■

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए राष्ट्रहित सर्वोपरि

&jke yky

jkष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आज अपरिचित नाम नहीं है। भारत में ही नहीं, विश्वभर में संघ के स्वयंसेवक फैले हुए हैं। भारत में लद्दाख से लेकर अंडमान निकोबार तक इसकी नियमित शाखायें हैं तथा वर्ष भर विभिन्न तरह के कार्यक्रम चलते रहते हैं। पूरे देश में आज 35,000 स्थानों (नगर व ग्रामों) में संघ की 50,000 शाखायें हैं तथा 9500 साप्ताहिक मिलन व 8500 मासिक मिलन चलते हैं। स्वयंसेवकों द्वारा समाज के उपेक्षित वर्ग के उत्थान के लिए, उनमें आत्मविश्वास व राष्ट्रीय भाव निर्माण करने हेतु डेढ़ लाख से अधिक सेवा कार्य चल रहे हैं। संघ के अनेक स्वयंसेवक सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समाज के विभिन्न बंधुओं से सहयोग से अनेक संगठन चला रहे हैं।

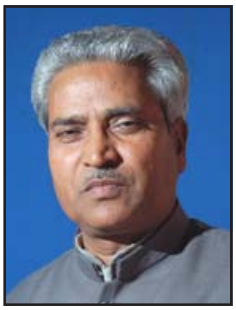

राष्ट्र व समाज पर आने वाली हर विपदा में स्वयंसेवकों द्वारा सेवा के कीर्तिमान खड़े किये गये हैं। संघ से बाहर के लोगों यहां तक कि विरोध करने वालों ने भी समय–समय पर इन सेवा कार्यों की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। नित्य राष्ट्र साधना (प्रतिदिन की शाखा) व समय–समय पर किये गये कार्यों व व्यक्त विचारों के कारण ही दुनिया की नजर में संघ राष्ट्रशक्ति बनकर उभरा है। ऐसे संगठन के बारे में तथ्यपूर्ण सही जानकारी होना आवश्यक है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का जन्म सं0 1982 विक्रमी (सन 1925) की विजयादशमी को हुआ। संघ के संस्थापक डॉ0 केशवराव बलिराम हेडगेवार थे। डॉ0 हेडगेवार के बारे में कहा जा सकता है कि वे जन्मजात देशभक्त थे। छोटी आयु में ही रानी विक्टोरिया के जन्मदिन पर स्कूल से मिलने वाला मिठाई का दोना उन्होंने कूड़े में फेंक दिया था। भाई द्वारा पूछने पर उत्तर दिया ''हम पर जबरदस्ती राज्य करने वाली रानी का जन्मदिन हम क्यों मनायें?'' ऐसी अनेक घटनाओं से उनका जीवन भरा पड़ा है।

इस वृत्ति के कारण जैसे–जैसे वे बड़े हुए राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ते गये। वंदे मातरम् कहने पर स्कूल से निकाल दिये गये। बाद में कलकत्ता मेडिकल कॉलेज में इसलिए पढ़ने गये कि उन दिनों कलकत्ता क्रांतिकारी

गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र था। वहां रहकर अनेक प्रमुख क्रांतिकारियों के साथ काम किया। लौटकर उस समय के प्रमुख नेताओं के साथ आजादी के आंदोलन से जुड़े रहे। 1920 के नागपुर अधिवेशन की सम्पूर्ण व्यवस्थायें सम्भालते हुए पूर्ण स्वराज्य की मांग का आग्रह डॉ0 साहब ने कांग्रेस नेताओं से किया। उनकी बात तब अस्वीकार कर दी गयी। बाद में 1929 के लाहौर अधिवेशन में जब कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव पारित किया तो डॉ0 हेडगेवार ने उस समय चलने वाली सभी संघ शाखाओं से धन्यवाद का पत्र लिखवाया क्योंकि उनके मन में आजादी की कल्पना पूर्ण स्वराज्य के रूप में ही थी। आजादी के आंदोलन में डॉ0 हेडगेवार स्वयं दो बार जेल गये। उनके साथ और भी अनेकों स्वयंसेवक जेल गये। फिर भी आज तक यह झूठा प्रश्न उपस्थित किया जाता है कि आजादी के आंदोलन में संघ कहां था?

डॉ0 हेडगेवार को देश की परतंत्रता अत्यंत पीड़ा देती थी। इसीलिए उस समय स्वयंसेवकों द्वारा ली जाने वाली प्रतिज्ञा में यह शब्द बोले जाते थे ''................. देश को आजाद कराने के लिए मैं संघ का स्वयंसेवक बना हूं... ......'' डॉ0 साहब को दूसरी सबसे बड़ी पीड़ा यह थी कि इस देश का सबसे प्राचीन समाज यानि हिन्दू समाज राष्ट्रीय स्वाभिमान से शून्य प्रायः आत्म विस्मृति में डूबा हुआ है, उसको ''मैं अकेला क्या कर सकता हूं'' की भावना ने ग्रसित कर लिया है। इस देश का बहुसंख्यक समाज यदि इस दशा में रहा तो कैसे यह देश खड़ा होगा? इतिहास गवाह है कि जब–जब यह बिखरा रहा तब–तब देश पराजित हुआ है। इसी सोच में से जन्मा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। इसी परिप्रेक्ष्य में संघ का उद्देश्य हिन्दू संगठन यानि इस देश के प्राचीन समाज में राष्ट्रीय स्वाभिमान, निःस्वार्थ भावना व एकजुटता का भाव निर्माण करना बना।

यहां यह स्पष्ट कर देना उचित ही है कि डॉ0 हेडगेवार का यह विचार सकारात्मक सोच का परिणाम था। किसी के विरोध में या किसी क्षणिक विषय की प्रतिक्रिया में से यह कार्य नहीं खड़ा हुआ। अतः इस कार्य को मुस्लिम विरोधी या ईसाई विरोधी कहना संगठन की मूल भावना के ही विरुद्ध हो जायेगा। हिन्दू संगठन शब्द सुनकर जिनके मन में इस प्रकार के पूर्वाग्रह बन गये हैं उनके लिए संघ को समझना कठिन ही होगा। तब उनके द्वारा संघ जैसे प्रखर राष्ट्रवादी संगठन को, राष्ट्र के लिए समर्पित संठन को संकुचित, साम्प्रदायिक आदि शब्द प्रयोग आश्चर्यजनक नहीं है। हिन्दू के मूल स्वभाव उदारता व सहिष्णुता के कारण दुनिया के सभी मत–पंथों को भारत में प्रवेश व प्रश्रय मिला। वे यहां आये, बसे। कुछ मत यहां की संस्कृति में रच बस गये तथा कुछ अपने स्वतंत्र अस्तित्व के साथ रहे। हिन्दू ने यह भी स्वीकार कर लिया क्योंकि उसके मन में बैठाया गया है–

राष्ट्रीय सुरक्षा का मोर्चा हो, दैवीय आपदा हो, दुर्घटना हो, समाज सुधार का कार्य हो, रूढ़ि–कुरीति से मुक्त समाज के निर्माण का कार्य हो, विभिन्न राष्ट्रीय व सामाजिक विषयों पर समाज के सकारात्मक प्रबोधन का विषय हो.....और भी ऐसे अनेक मोर्चों पर संघ स्वयंसेवक जान की परवाह किये बिना हिम्मत और उत्साह के साथ डटे हैं तथा परिवर्तन लाने का प्रयास कर रहे हैं, परिवर्तन आ भी रहा है।

रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम्।
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥

अर्थ–जैसे विभिन्न नदियां भिन्न–भिन्न स्रोतों से निकलकर समुद्र में मिल जाती है, उसी प्रकार हे प्रभो! भिन्न–भिन्न रुचि के अनुसार विभिन्न टेड़े–मेढ़े अथवा सीधे रास्ते से जाने वाले लोग अन्त में तुझमें (परमपिता परमेश्वर) आकर मिलते है।

&f'ko efgek L=kÜke] 7

इस तरह भारत में अनेक मत–पंथों के लोग रहने लगे। इसी स्थिति को कुछ लोग बहुलतावादी संस्कृति की संज्ञा देते हैं तथा केवल हिन्दू की बात को छोटा व संकीर्ण मानते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि भारत में सभी पंथों का सहज रहना यहां के प्राचीन समाज (हिन्दू) के स्वभाव के कारण है। उस हिन्दुत्व के कारण है जिसे देश के सर्वोच्च न्यायालय ने भी जीवन पद्धति कहा है, केवल पूजा पद्धति नहीं। हिन्दू के इस स्वभाव के कारण ही देश बहुलतावादी है। यहां विचार करने का विषय है कि बहुलतावाद महत्वपूर्ण है या हिन्दुत्व महत्वपूर्ण है जिसके कारण बहुलतावाद चल रहा है। अतः देश में जो लोग बहुलतावाद के समर्थक हैं उन्हें भी हिन्दुत्व के विचार को प्रबल बनाने के बारे में सोचना होगा। यहां हिन्दुत्व के अतिरिक्त कुछ भी प्रबल हुआ तो न तो भारत 'भारत' रह सकेगा न ही बहुलतावाद जैसे सिद्धांत रह सकेंगे। क्या पाकिस्तान में बहुलतावाद की कल्पना की जा सकती है?

इस परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इस देश की राष्ट्रीय आवश्यकता है। हिन्दू संगठन को नकारना, उसे संकुचित आदि कहना राष्ट्रीय आवश्यकता की अवहेलना करना ही है। संघ के स्वयंसेवक हिन्दू संगठन करके अपने राष्ट्रीय कर्तव्य का पालन कर रहे हैं। संघ की प्रतिदिन लगने वाली शाखा

व्यक्ति के शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा के विकास की व्यवस्था तथा उसका राष्ट्रीय मन बनाने का प्रयास होता है। ऐसे कार्य को अनर्गल बातें करके किसी भी तरह लांछित करना उचित नहीं।

संघ की प्रार्थना, प्रतिज्ञा, एकात्मता स्त्रोत, एकात्मता मंत्र जिनको स्वयंसेवक प्रतिदिन ही दोहराते हैं, उन्हें पढ़ने के पश्चात संघ का विचार, संघ में क्या सिखाया जाता है, स्वयंसेवकों का मानस कैसा है यह समझा जा सकता है। प्रार्थना में मातृभूमि की वंदना, प्रभु का आशीर्वाद, संगठन के कार्य के लिए गुण, राष्ट्र के परंवैभव (सुख, शांति, समृद्धि) की कल्पना की गई है। स्वाभाविक ही सभी की सुख शांति की कामना की है। सभी के अंत में भारत माता माता की जय कहा है। स्वाभाविक ही हर स्वयंसेवक के मन का एक ही भाव बनता है। हम भारत की जय के लिए कार्य कर रहे हैं। एकात्मता स्त्रोत व मंत्र में भी भारत की सभी पवित्र नदियों, पर्वतों, पुरियों सहित देश व समाज के लिए कार्य करने वाले प्रमुख व्यक्तियों (महर्षि बाल्मीकि, बुद्ध, महावीर, गुरु नानक, गांधी, रसखान, मीरा, अम्बेडकर, महात्मा फुले सहित ऋषि, बलिदानी, समाज सुधारक वैज्ञानिक आदि) का वर्णन है तथा अंत में भारत माता की जय। इस सबका ही परिणाम है कि संघ के स्वयंसेवक के मन में जाति–बिरादरी, प्रांत–क्षेत्रवाद, ऊंच–नीच, छूआछूत आदि क्षुद्र विचार नहीं आ पाते।

संघ की प्रार्थना, प्रतिज्ञा, एकात्मता स्त्रोत, एकात्मता मंत्र जिनको स्वयंसेवक प्रतिदिन ही दोहराते हैं, उन्हें पढ़ने के पश्चात संघ का विचार, संघ में क्या सिखाया जाता है, स्वयंसेवकों का मानस कैसा है यह समझा जा सकता है। प्रार्थना में मातृभूमि की वंदना, प्रभु का आशीर्वाद, संगठन के कार्य के लिए गुण, राष्ट्र के परंवैभव (सुख, शांति, समृद्धि) की कल्पना की गई है।

जब भी कभी ऐसे अवसर आये जहां सेवा की आवश्यकता पड़ी वहां स्वयंसेवक कथनी व करनी में खरे उतरे हैं। जब सुनामी लहरों का कहर आया तब वहां स्वयंसेवकों ने जो सेवा कार्य किया उसकी प्रशंसा वहां के ईसाई व कम्युनिस्ट बन्धुओं ने भी की है। अमेरिका के कैटरीना के भयंकर तूफान में भी वहां स्वयंसेवकों ने प्रशंसनीय सेवा की। कुछ वर्ष पूर्व चरखी दादरी (हरियाणा) में दो हवाई जहाजों के टकरा जाने के परिणामस्वरूप 300 से अधिक लोगों की मृत्यु हुई। दुर्भाग्य से ये सभी मुस्लिम समाज के थे लेकिन उनकी सहायता करने 'सैकल्युलरिस्ट' नहीं गये। सभी के लिए कफन, ताबूत आदि की व्यवस्था, उनके परिजनों को सूचना देने का काम, शव लेने आने वालों की भोजन, आवास आदि की व्यवस्था वहां के स्वयंसेवकों ने की। इस कारण वहां की मस्जिद में स्वयंसेवकों का अभिनंदन हुआ, मुस्लिम पत्रिका 'रेडियैंस' ने 'शाबास आरएसएस' शीर्षक से लेख छापा। ऐसी अनेक घटनाओं से संघ का इतिहास भरा पड़ा है।

गुजरात, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, अंडमान–निकोबार आदि भयंकर तूफानों में सेवा करने हेतु पूरे देश से स्वयंसेवक गये, बिना किसी भेद से सेवा, पूरे देश से राहत सामग्री व धन एकत्रित करके भेजा, मकान बनवाये। वहां पीड़ित लोग स्वयंसेवकों के रिश्तेदार या जाति–बिरादरी के थे क्या? बस मन में एक ही भाव था कि सभी भारत माता के पुत्र हैं इसलिए सभी भाई–भाई है। अमेरिका, मॉरीशस आदि की सेवा में भी एक ही भाव– वसुधैव कुटुम्बकम्। शाखा पर जो संस्कार सीखे उसी का प्रगटीकरण है यह। इसे देखकर सर्वोदयी नेता श्री सुब्बाराव ने कहा– आरएसएस यानी रेडीनेस फॉर सोशियल सर्विस (निःस्वार्थ सेवा के लिए तत्परता)।

दूसरा दृश्य भी देखें– जब राजनीतिज्ञों व तथाकथित समाज विरोधी तत्वों द्वारा विशेषकर हिन्दू समाज को विभाजित करने के प्रयास हो रहे हैं तब स्वयंसेवक समाज में सामाजिक समरसता निर्माण करने का प्रयास कर रहे हैं। महापुरुष पूरे समाज के लिए होते हैं– उनका मार्ग दर्शन भी पूरे समाज के लिए होता है तब उनकी जयंती आदि भी जाति या वर्ग विशेष ही क्यों मनायें? पूरे समाज की ही सहभागिता उसमें होनी चाहिये। समरसता मंच के माध्यम से स्वयंसेवकों ने ऐसा प्रयास प्रारम्भ किया है तथा समाज के सभी वर्गों को जोड़ने, निकट लाने में सफलता मिल रही है, वैमनस्यता कम हो रही है। दिखने में छोटा कार्य है किन्तु कुछ समय पश्चात् यही बड़े परिणाम लाने वाला कार्य सिद्ध होगा। मुस्लिम, ईसाई, मतावलम्बियों के साथ भी संघ अधिकारियों की बैठकें हुई हैं किन्तु कुछ लोगों को ऐसा बैठना रास नहीं आता अतः परिणाम निकलने से पूर्व ही ऐसे प्रयासों में विघ्नसंतोषी विघ्न डालने के प्रयास करते रहते हैं।

गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले लोग, वनवासी, गिरिवासी, झुग्गी–झोपडियों व मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों का दुःख दर्द बांटने, उनमें आत्मविश्वास निर्माण करने, उनके शैक्षिक व आर्थिक स्तर को सुधारने के लिए भी सेवा भारती, सेवा प्रकल्प संस्थान, वनवासी कल्याण आश्रम व अन्य विभिन्न ट्रस्ट व संस्थायें गठित करके जुट गये हैं हजारों स्वयंसेवक। इनके प्रयासों का

बड़ा ही अच्छा परिणाम भी आ रहा है। इस परिणाम को देखकर एक विद्वान व्यक्ति कह उठे– आरएसएस यानी रिवोल्यूशन इन सोशियल सिस्टम (सामाजिक व्यवस्था में क्रांति)।

राष्ट्रीय सुरक्षा के मोर्चे पर भी स्वयंसेवक खरे उतरे हैं। सन 47–48, 65, 71 के युद्ध के समय सेना को हर प्रकार से नागरिक सहयोग प्रदान करने वालों की अंग्रिम पंक्ति में थे स्वयंसेवक। भोजन, दवा, रक्त जैसी भी आवश्यकता सेना को पड़ी तो स्वयंसेवकों ने उसकी पूर्ति की। यही स्थिति गत कारगिल के युद्ध के समय हुई।

इन मोर्चों पर कई स्वयंसेवक बलिदान भी हुए हैं। अनेकों घायल हुए हैं। इन्होंने न सरकार से मुआवजा लिया न ही मैडल। यही है निःस्वार्थ देश सेवा। संघ का इतिहास त्याग, तपस्या, बलिदान, सेवा व समर्पण का इतिहास है, अन्य कुछ नहीं। सेना के एक अधिकारी ने कहा–''राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारत का रक्षक भुजदंड है।''

राष्ट्रीय सुरक्षा का मोर्चा हो, दैवीय आपदा हो, दुर्घटना हो, समाज सुधार का कार्य हो, रूढ़ि–कुरीति से मुक्त समाज के निर्माण का कार्य हो, विभिन्न राष्ट्रीय व सामाजिक विषयों पर समाज के सकारात्मक प्रबोधन का विषय हो.....और भी ऐसे अनेक मोर्चों पर संघ स्वयंसेवक जान की परवाह किये बिना हिम्मत और उत्साह के साथ डटे हैं तथा परिवर्तन लाने का प्रयास कर रहे हैं, परिवर्तन आ भी रहा है।

इस अर्थ में विचार करेंगे तो स्वयंसेवक राष्ट्र की महत्वपूर्ण पूंजी है। काश! इस पूंजी का सदुपयोग, राष्ट्र के पुनर्निर्माण में ठीक से किया जाता तो अब तक शक्तिशाली व समृद्ध भारत का स्वरूप उभारने में अच्छी और सफलता मिल सकती थी।

अभी भी देर नहीं हुई है। विभिन्न दलों के राजनैतिक नेता, समाजशास्त्री, विचारक, चिंतक पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर 'स्वयंसेवक' रूपी लगनशील, कर्मठ, अनुशासित, देशभक्ति व समाज सेवा की भावना से ओत–प्रोत इस राष्ट्र शक्ति को पहचानकर राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में इसका संवर्धन व सहयोग करें तो निश्चित ही दुनिया में भारत शीघ्र समर्थ, स्वावलम्बी व सम्मानित राष्ट्र बन सकेगा। पिछले 85 वर्षों से स्वयंसेवकों का एक ही स्वप्न है– भारतमाता की जय। ■

(लेखक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) हैं।)

उमर अब्दुल्ला को संवैधानिक पदों पर रहने का अधिकार नहीं : भाजयुमो

भारतीय जनता युवा मोर्चा द्वारा चलाये जा रहे इंडिया फ़र्स्ट कैम्पेन (देश पहले अभियान) के अन्तर्गत 16 अक्टूबर, 2010 को भाजयुमो हिमाचल प्रदेश द्वारा धर्मशाला में जम्मू एवं कश्मीर की वर्तमान परिस्थितियों को लेकर जनजागरण सभा आयोजित की गई।

> कश्मीर घाटी की वर्तमान परिस्थितियों के लिये केन्द्र की यू.पी.ए. सरकार व राज्य की नेशनल कांफ्रेस सरकार जिम्मेदार है।

सभा में भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनुराग ठाकुर (सांसद) उपस्थित थे। सभा में उपस्थित हजारों लोगों को संबोधित करते हुये राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनुराग ठाकुर ने कश्मीर घाटी की वर्तमान परिस्थितियों के लिये केन्द्र की यू.पी.ए. सरकार व राज्य की नेशनल कांफ्रेस सरकार को जिम्मेदार बताया। जम्मू एवं कश्मीर के विलय पर मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला के बयान की कड़ी आलोचना करते हुये श्री ठाकुर ने उमर को याद दिलाया कि विलय को जिस संविधान सभा ने स्वीकार किया था उसके एक सदस्य उमर के दादा शेख अब्दुल्ला भी थे।

श्री अनुराग ठाकुर ने उमर अब्दुल्ला के इस्तीफे की मांग करते हुये कहा कि विलय की वैधता पर प्रश्न चिन्ह लगाने व वार्ता में पाकिस्तान को शामिल करने का सुझाव देने के बाद उमर अब्दुल्ला को संवैधानिक पद पर रहने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। सभा में भारतीय जनता युवा मोर्चा, हिमाचल प्रदेश के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र अत्री, जिला अध्यक्ष हिमांशु मिश्रा तथा उद्योग मंत्री किशन कपूर उपस्थित थे। ■

कृपया राजभवन को विपक्ष भवन मत बनने दीजिये

& vEck pj.k of'k"B

आरम्भ में राज्यपाल के पद को बनाये रखने या इसे समाप्त करने पर जब संविधान सभा में चर्चा हुई तो आम मत यह था कि इस पद को समाप्त कर दिया जाये क्योंकि विदेशी सरकार ने तो इस पद को प्रदेश सरकार की बांह मरोड़ कर अपना उल्लू सीधा करने के लिये ही इस्तेमाल किया था। पर बाद में चर्चा के बाद इसे बनाये रखने का निर्णय लिया गया। तब यह मत बना कि प्रजातन्त्रीय ढांचे में राज्यपाल का पद अपने आप जनतन्त्रीय रंग में घुल जायेगा और राज्यों में यह संघीय सरकार का एक प्रतिनिधि बनकर प्रदेश सरकारों का एक मित्र व मार्गदर्शक बनकर अपने संवैधानिक कर्तव्यों का ही पालन करेगा।

स्वतन्त्र भारत को कायम रखा। 1967 तक तो राज्यपाल के पद पर कोई विवाद खड़ा ही नहीं हुआ क्योंकि तब तक प्रदेशों व केन्द्र में एक ही दल (कांग्रेस) का ही शासन रहा। पर 1967 में स्थिति बदल गई। केन्द्र में तो कांग्रेस कम बहुमत से सत्ता पर बनी रही पर कई प्रदेशों में गैरकांग्रेसी मिली–जुली सरकारें बन गईं। तब से केन्द्र में सत्ताधारी दल कांग्रेस ने राज्यपालों के पद का कुछ हद तक अपने राजनैतिक उद्देश्यों के लिये उपयोग में लाने का प्रयास शुरू किया। यह वह समय था जब आयाराम–गयाराम के युग का प्रादुर्भाव हुआ। कुछ अपवादों को छोड़, राज्यपाल जनता द्वारा चुनी हुई प्रदेश सरकारों को हटा कर सत्ताधारी दल या उसके समर्थित दलों की सरकारें बनाने के लिये सत्ताधारी दल के हाथों की कठपुतली बन बैठे। तब से राज्यपाल का संवैधानिक पद अपनी मान–मर्यादा व शान खोने लगा। यह पद अब तक अपनी पुरानी खोई हुई प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त नहीं कर पाया है। इस पद की गिरावट लगातार जारी है। जब से श्रीमती सोनिया गांधी की प्रेरणा प्राप्त डा0 मनमोहन सिंह की यूपीए सरकार छः वर्ष पूर्व आई है उसके बाद तो गिरावट की गति और भी तेज़ हो गई है।

2004 में सत्ता में आने के तुरन्त बाद पहला काम यूपीए सरकार ने किया एनडीए सरकार द्वारा बनाये गये राज्यपालों को तुरन्त हटाना। बहाना बनाया गया कि उनकी विचारधारा कांग्रेस की विचारधारा से मेल नहीं खाती। बाद में जब यह मामला उच्चतम न्यायालय में पहुंचा तो देश के सर्वोच्च न्यायालय ने इस कृत्य की अनदेखी करते हुये इसे असंवैधानिक करार दिया।

के प्रथम 25 वर्षों में तो इस पद पर बैठे व्यक्तियों के बारे कोई समस्या या शिकायत नहीं उठी। स्वतन्त्र भारत में जो व्यक्ति राज्यपाल बनाये गये वह या तो प्रतिष्ठित राजनेता थे या वरिष्ठ उच्चाधिकारी। पर उन महानुभावों ने अपनी निष्पक्षता से इस पद की गरिमा

जैसे–जैसे समय बीतता गया प्रदेश सरकारों के मित्र व मार्गदर्शक और संविधान के प्रावधानों और उसकी मूल भावना के अनुसार काम करने वाले राज्यपालों की संख्या निरन्तर कम

होती चली गई। केन्द्र सरकार के प्रदेशों में एजेन्ट होने के स्थान पर राज्यपाल सत्ताधारी दल के इशारे पर न नाचने वाली दूसरे दलों की सरकारों को तोड़ने–फोड़ने वाले विध्वंसकारी तत्व बनते गये।

यूपीए के पिछले छः साल में राज्यपालों ने अपने पद की गरिमा को और भी नीचे गिराया है। इसकी विपरीत वह अदालतों की फब्तियों और भर्त्सना के ही शिकार हुये हैं। ग़ैर–यूपीए प्रदेशों में यूपीए ने ऐसे महानुभावों को राज्यपाल नियुक्त कर रखा है जो कट्टर कांग्रेसी हैं और जिनके तार सीधे 10 जनपथ से जुड़े बैठे हैं और पार्टी के लिये वह संविधान की धज्जियां उड़ाने के लिये चाहे कुछ भी हो जाये सदा तत्पर बैठे हैं। संविधान और विधि विशेषज्ञों ने उनके आचरण को अपने पद ही गरिमा के अनुरूप नहीं माना है। बहुत पीछे के इतिहास को न उखेड़ते हुये यदि हम पिछले छः वर्ष में श्री बूटा सिंह, श्री ए. सी जमीर, श्री सिब्ते रिज़वी के आचरण पर ही नजर दौड़ायें तो सिर शर्म से झुक जाता है। अब तो आम जनता में यह धारणा बनती जा रही है कि जनता की खून–पसीने की कमाई को सत्ताधारी दल को राजनैतिक लाभ पहुंचाने के लिये राज्यपाल के सफेद हाथी पद पर लुटाया जा रहा है।

सिर नीचा किया

यूपीए सरकार राज्यपालों की नियुक्ति के मामले में एक सोची–समझी नीति पर चल रही है। सभी ग़ैर–यूपीए शासित राज्यों में विशेष कृपापात्र कांग्रेसियों को ही लगाया गया है जिनके लिये संविधान के प्रावधान व मूल भावना गौण और 10 जनपथ के प्रति उनकी निष्ठा सर्वोपरि है हालांकि उन्होंने संविधान के प्रावधानों के अनुसार ही अपना दायित्व निभाने की शपथ खा रखी होती है। वह संविधान के प्रावधानों को तोड़–मरोड़ कर कांग्रेस की हितों की रक्षा करने में अपने पद की बाज़ी भी लगा सकते हैं। उन्हें अपने पद की गरिमा नहीं कांग्रेस के हितों की चिन्ता रहती है। सर्वश्री बूटा सिंह, ए. सी जमीर तथा सिब्ते रिज़्वी सरीखी महानुभाव इसी श्रेणी में आते हैं।

इन महानुभावों पर कांग्रेस के आला नेताओं का वरदहस्त है यह इस से भी साबित हो जाता है कि जब बिहार के तत्कालीन राज्यपाल श्री बूटा सिंह ने संविधान के प्रावधानों की धज्जियां उड़ाईं और उच्चतम न्यायालय ने उनके आचरण की कड़े शब्दों में निन्दा की और जब उन्हें त्यागपत्र देने के सिवाय को चारा न रह गया तो कुछ ही दिनों बाद कांग्रेस के आकाओं ने संविधान के प्रावधानों की धज्जियां उड़ा कर कांग्रेस कह हितों की रक्षा करने के दुःसाहस पर कुछ ही महीनों बाद उन्हें अनुसूचित जाति राष्ट्रीय आयोग के संवैधानिक पद पर बैठा कर पुरस्कृत व सम्मानित किया गया।

राज्यपाल के ही कारण परम्परा के विरूद्ध कुछ ही दिनों बाद येदियुरप्पा सरकार को दोबारा विश्वासमत प्राप्त करना पड़ा। अब शायद कुछ ही दिनों में तीसरी बार भी करना पड़ सकता है। सत्ता के इस घिनौने खेल में एक गलत परम्परा को कायम करने का श्रेय राज्यपाल श्री हंसराज भारद्वाज और उनकी पुरानी पार्टी कांग्रेस को ही जायेगा जिसके प्रति वह सदा समर्पित रहें हैं।

कर्नाटक के राज्यपाल श्री हंसराज भारद्वाज भी उसी परम्परा को निभाने में जी जान की बाज़ी लगाये बैठे लगते हैं। आरोप तो यह लगाया जा रहा है कि उन्होंने राजभवन को केन्द्र में सत्ताधारी दल के कैम्प आफिस में तब्दील कर दिया है जहां से भाजपा सरकार को हटाओ अभियान की रचना व संचालन हो रहा है। जब 16 बाग़ी (11 भाजपा के व पांच निर्दलीय) विधायक राज्यपाल महोदय को मिले और उन्होंने उन्हें बताया कि उन्होंने भाजपा सरकार से समर्थन वापस ले लिया है तो इसमें कुछ बुराई नहीं कि राज्यपाल ने मुख्य मन्त्री को तुरन्त विश्वासमत प्राप्त करने के लिये चार दिन का नोटिस दे दिया। पर जब भाजपा ने बाग़ी विधायकों के विरूद्ध दलबदल विरोधी कानून के अन्तर्गत विधान सभा अध्यक्ष के शिकायत की और उन्होंने सम्बंधित विधायकों को नोटिस जारी कर दिया तो विधान सभा सत्र के एक दिन पहले विधान सभा अध्यक्ष को यह परामर्श देकर कि विधान सभा में केवल विश्वासमत पर ही कार्यवाही हो और सदस्यों की स्थिति यथावत बनाई रखी जाये तो उनकी मंशा स्पष्ट हो गई। एक प्रख्यात विधि विद्वान व पूर्व कानून मन्त्री रहे राज्यपाल को यह तो ज्ञात ही होना चाहिये था कि जो कार्य बाग़ी विधायक कर रहे हैं वह संविधान में प्रदत्त दलबदल कानून के अनुसार अपराध है। उनके पत्र की मंशा यह थी कि विधान सभा अध्यक्ष बाग़ियों की अपराध को अनदेखा कर येदुरप्पा सरकार को गिराने के उनके मनसूबे को पूरा करने में उनकी मदद करें। राज्यपाल ने धमकी दी कि यदि विधान सभा की सदस्यता में छेड़छाड़ की गई तो उसका विश्वासमत की प्रकिया पर बुरा असर पड़ेगा और उस पर विधानसभा का निर्णय उन्हें स्वीकार्य नहीं होगा।

सदन में अध्यक्ष सर्वोपरि माना जाता है और उसका निर्णय सभी को मान्य होता है। इस बात की पुष्टि तो

उच्चतम न्यायालय भी कर चुका है। दलबदल निषेध कानून में भी सदस्यों के विरूद्ध कार्यवाई का अधिकार भी केवल अध्यक्ष ही को है।

जब विधान सभा की कार्यवाई शुरू हुई तो अध्यक्ष ने उन 16 बाग़ी विधायकों के विरूद्ध दलबदल निषेध कानून के अन्तर्गत कार्रवाई कर उन की सदस्यता समाप्त कर दी। उसके बाद इस माहौल में मुख्यमन्त्री ने विश्वासमत रखा जिसे सदन ने ध्वनिमत से पास कर दिया। ऐसे हालात में कुछ और हो भी नहीं सकता था। उधर विपक्ष ने भी यह मांग नहीं की कि पक्ष और विपक्ष के मतों की गिनती की जाये। फिर इसमें गलत ही क्या था? श्री भारद्वाज को यह तो पता ही होना चाहिये था कि लोक सभा, राज्य सभा व प्रदेश विधान सभाओं में अनेक महत्वपूर्ण विधेयकों आदि पर निर्णय ध्वनिमत से ही हो जाता है।

पर राज्यपाल महोदय के मन को यह सब नहीं भाया और उन्होंने कुछ ही घंटों में इस विश्वासमत पर विधान सभा के निर्णय को ठुकराते हुये केन्द्र सरकार को भाजपा सरकार भंग कर राष्ट्रपति शासन लगाने और सदन को निलम्बित रखने की सिफारिश कर दी।

भारतीय जनता पार्टी ने राज्यपाल के इस पक्षपात पूर्ण कदम की भरपूर भर्त्सना की और आरोप लगाया कि वह विपक्ष के नेता की भूमिका निभा रहे हैं।

संविधान विशेषज्ञों ने राज्यपाल के इस व्यवहार को गलत ठहराया। कांग्रेस जो जनता दल (एस) के कन्धे पर से पीछे से तीर चला रही थी, उसके पास राज्यपाल का सीधा बचाव करने में मुश्किल पेश आई तो उसने अपने आपको अलग रखने की चेष्टा की और कहा कि उसे राज्यपाल के पग से कुछ लेना–देना नहीं है और यह मामला यूपीए सरकार और राज्यपाल के बीच है। पर शीघ्र ही उसे महसूस हुआ कि उसने उस भारद्वाज को अकेला छोड़ दिया है जिसने जो कुछ भी किया वह कांग्रेस के ही हित में करने की कोशिश की। कुछ समाचारों के अनुसार राज्यपाल ने तो पहले इस बारे गृह मन्त्री पी चिदम्बरम से भी बात की थी। अन्ततः कांग्रेस अपने रंग में आ गई और वह राज्यपाल के पूरे बचाव पर उतर आई।

हैरानी की बात तो यह है कि अधिकारिक रूप से समाचार आया कि केन्द्रिय मन्त्रिमण्डल राज्यपाल की रिपोर्ट पर विचार करेगा। मन्त्रिमण्डल की बैठक भी हुई पर यह आज तक पता नहीं चल सका है कि क्या राज्यपाल की रिपोर्ट विचारार्थ आई या रहीं और आई तो उस पर क्या निर्णय हुआ – उसे नामंजूर कर दिया गया या कभी फिर विचाराधीन आयेगी, यह अभी तक एक राज़ बना हुआ है।

पर इतना अवश्य है कि अगले ही दिन राज्यपाल भारद्वाज ने अपना पैंतरा बदला और यकायक बुलाये एक सम्वाददाता सम्मेलन में घोषणा कर दी कि उन्होंने मैत्रीभाव से मुख्यमन्त्री येदियुरप्पा को सुझाव दिया है कि वह 14 अक्तूबर को विधान सभा में पुनः विश्वासमत प्राप्त करें। साथ ही यह भी माना कि संविधान में कुछ ही दिनों उपरान्त पुनः विश्वासमत प्राप्त करने का कोई प्रावधान नहीं है।

मुख्यमन्त्री ने राज्यपाल के इस सुझाव को चुनौती मान कर तुरन्त स्वीकार कर लिया। राज्यपाल ने इस नये पैंतरे को मैत्रीपूर्ण सुझाव तो अवश्य बताया पर यह स्पष्ट नहीं किया कि दोबारा विश्वासमत प्राप्त करने का सुझाव यदि मैत्रीभाव है तो उनकी ही सरकार को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लागू करने की सिफारिश व सुझाव क्या था?

14 अक्तूबर को विश्वासमत प्राप्ति से पूर्व बाग़ी विधायकों की याचिका पर सुनवाई होनी थी और विपक्ष और राज्यपाल को अदालत के निर्णय से काफी उम्मीद लगती थी। पर ऐसा हुआ नहीं। अदालत ने किसी को भी कोई राहत नहीं दी। अदालत ने पांच निर्दलीय विधायकों की भी इस मांग को स्वीकार नहीं किया कि उन्हें सदन में उपस्थित होने की अनुमति और मताधिकार का प्रयोग कर उनके मतों को सीलबन्द रखा जाये और अदालत के निर्णय के बाद खोला जाये।

अन्ततः 14 अक्तूबर को येदियुरप्पा सरकार ने सदन में विश्वासमत प्राप्त कर लिया। पक्ष में 106 वोट पड़े और विपक्ष में 100। विधान सभा अध्यक्ष ने अपने मताधिकार का प्रयोग नहीं किया। इस प्रकार यदि पांच निर्दलीय विधायकों के मत सरकार के विरूद्ध गिन भी लिये जायें तो भी सरकार जीत जाती है।

अब उच्च न्यायालय का निर्णय चाहे कुछ भी हो, मामला तो अन्ततः सर्वोच्च न्यायालय तक पहुंचेगा ही। उसके बाद भी अन्ततः निर्णय तो सदन ही करेगा क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय तो पहले ही कह चुका है कि किसी सरकार के पास बहुमत है या नहीं इसका निर्णय तो सदन ही करेगा। इसलिये निर्णय किसी के हक या विरोध में हो अन्ततः इसका निर्णय करने के लिये एक बार फिर विधान सभा का सत्र बुलाना पड़ेगा। राज्यपाल के ही कारण परम्परा के विरूद्ध कुछ ही दिनों बाद येदियुरप्पा सरकार को दोबारा विश्वासमत प्राप्त करना पड़ा।

सत्ता के इस घिनौने खेल में एक गलत परम्परा को कायम करने का श्रेय राज्यपाल श्री हंसराज भारद्वाज और उनकी पुरानी पार्टी कांग्रेस को ही जायेगा, जिसके प्रति वह सदा समर्पित रहे हैं। ■

(लेखक भाजपा के साहित्य एवं प्रकाशन प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक हैं)

सही नब्ज़ पकड़ी डॉ. ने...

&idt >k

Ik मान्यतया नेताओं के बयान या साक्षात्कार आदि इस तरह के नहीं होते कि पढ़ कर ऐसा लगे कि कुछ पढ़ा हो आपने। मूलतः वह मेडिकल स्टोर के लिए लिखी गयी डॉ. की पर्ची की तरह ही होता है। एक ही लिखावट, वही भाषा, वही राजनीतिक शब्दावली। कंप्यूटर का सामान्य जानकार भी यह मानने पर विवश हो सकता है कि शायद नेताजी के कंप्यूटर में कुछ बयान सुरक्षित हैं जिसका सन्दर्भ और दिनांक बदल–बदल कर काम चलाया जा रहा होगा। राजनीति में ऐसे मौलिक चिंतन के अभाव वाले ज़माने में छत्तीसगढ़ के एक अखबार में हाल में प्रकाशित मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह का साक्षात्कार उल्लेखनीय है। इस मुलाक़ात में डॉ. रमन ने कहा 'जब बड़े लोग दुखी होकर कहते हैं कि मजदूर सबसे ज्यादा सुखी है तो मैं समझता हूं कि मेरा काम हो गया।' अगर वास्तव में किसी नेता की भावना ऐसी हो तथा सही अर्थों में वह ऐसा ही सोचता हो तो चाटुकार हो जाने के आरोप का ख़तरा उठा कर भी कहा जा सकता है। शाबास, अनन्य साधुवाद। देश या समाज को ऐसे ही नेताओं की ज़रूरत है।

भाजपा आज जिस वैचारिक धरातल पर खड़ा होने का दावा करती है उसके आधार ही हैं रमन के वह शब्द। पंडित दीनदयाल के समाज के सबसे अंतिम व्यक्ति की चिंता करने का आह्वान ही तो उस वाक्य में परावर्तित हुआ है। ना केवल डॉ. रमन बल्कि देश और समाज को यह समझ लेना चाहिए कि उसका 'काम' केवल तभी पूरा हो सकता है जब समाज में सबसे ज्यादा सम्मान श्रमवीरों का हो। समाज भले ही सभ्य होने का कितना भी दावा कर ले, लेकिन उसको अपने सभ्यता का मानदंड इसी को बनाना चाहिए कि वहां श्रम

जब बड़े लोग दुखी होकर कहते हैं कि मजदूर सबसे ज्यादा सुखी है तो मैं समझता हूं कि मेरा काम हो गया।' अगर वास्तव में किसी नेता की भावना ऐसी हो तथा सही अर्थों में वह ऐसा ही सोचता हो तो चाटुकार हो जाने के आरोप का ख़तरा उठा कर भी कहा जा सकता है। शाबास, अनन्य साधुवाद। देश या समाज को ऐसे ही नेताओं की ज़रूरत है।

कितना महत्त्वपूर्ण और कीमती है। यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि एक स्वस्थ अर्थव्यवस्था का भी आशय यही हो जहां 'श्रम' को प्राप्त करने में प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पडे। विकल्प कथित मालिकों के पास नहीं बल्कि मजदूरों के पास हो। 'मजदूरों' में से कुछ को चुन लेने की आज़ादी नहीं बल्कि उपलब्ध 'कामों' में से अपने लायक चुन लेने की आजादी मजदूरों के पास हो।

अखबार में यह साक्षात्कार ऐसे समय में आया है जब सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर में छत्तीसगढ को प्रथम आंका गया है। प्रदेश ने सारे विकसित राज्यों को पीछे छोड़ते हुए लगातार विकास का यह दर कायम रखा है। तो ऐसे में किसी मुख्यमंत्री के लिए सीधा और सरल रास्ता यह होता कि वह इस आंकड़े को ले–ले कर झूमे। उसको प्रचारित करने में सरकारी सिपहासालारों को जम कर लगा दे। पेज का पेज विज्ञापन जारी कर उस आंकड़े को ओढने–बिछाने–पहनने में सम्बंधित विभागों को लगा दे। लेकिन अगर मुख्यमंत्री को विकास के इन आंकड़ों से ज्यादा किसी गांव के व्यक्ति द्वारा कहे गए शब्दों की चर्चा करना ज्यादा उचित लगा तो यह कहा जा सकता है कि डॉ. ने 'नब्ज़' ठीक पकड़ी है। शायद मुख्यमंत्री को यह पता है कि आंकड़े कभी गीदम के किसी गांव के सुकालू के पेट और पीठ की दूरी नहीं मापा करते, ना ही वह मनेंद्रगढ़ के किसी नेताम या फिर सिमगा के किसी देवांगन के चूल्हे की गरमाई ही तापते हैं। आंकड़े कभी यह भी नहीं बताते कि जो संसाधन आपने इकट्ठे कर लिए हैं उसका आनुपातिक एवं समान बँटवारा भी हुआ है या नहीं। आंकड़े तो ये बता देंगे कि शादी के लिए अगर 22 वर्ष की लड़की की ज़रूरत हो तो 11–11 के दो से काम चला लें। तो केंद्र सरकार के सांख्यिकी में नंबर वन होना छत्तीसगढ़ के लिए प्रसन्नता की बात है लेकिन असली प्रसन्नता तो मजदूरों को प्राप्त करने के लिए व्यवसायियों, गोटियों द्वारा की गयी चिरौरी को देखना ही हो सकता है।

मोटे तौर पर किसी भी अर्थव्यवस्था

के दो संभाव्य मॉडल हो सकते हैं। अपनी समझ के लिए हम इसे 'पानी' और 'आग' का मॉडल कह सकते हैं। पानी का स्वभाव होता है ऊपर से नीचे की ओर प्रवाहित होना और आग का स्वभाव होता है नीचे से ऊपर की ओर धधकना। देखा जाय तो अभी तक अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं में पानी का मॉडल ही इस्तेमाल किया जाता रहा है कि संसाधनों को ऊपर से नीचे की ओर ले जाया जाय। अर्थवेत्ताओं ने इस मॉडल को उचित भी ठहराया और कहा कि अगर ऊपर में सम्पन्नता आयेगी तो स्वाभाविक ही धन का प्रवाह नीचे की ओर जाएगा। इसको 'थ्योरी ऑफ परकोलेशन' यानी 'रिसने का सिद्धांत' कहा गया। लेकिन शायद उन्हें मानव मन की गुत्थियों का पता नहीं था। अगर वह मानवीय दृष्टिकोण से विचार करने की कोशिश करते तो उन्हें पता चलता कि 'असंतोष' व्यक्ति का स्वाभाविक गुण होता है। पानी को नीचे की ओर रिसने से रोकने के लिए बड़े–बड़े बांधों की आविष्कार भी व्यक्ति ने कर रखा है और भले ही वह डूब मरे लेकिन पानी को तरसते लोगों तक दो बूँद पहचाना सामान्य मानव की फितरत नहीं होती। तो नीति निर्धारकों के लिए अर्थव्यवस्था का यही मॉडल उपयुक्त होगा जिसमें संसाधन नीचे से ऊपर की ओर जाए। आप चाहें तो इसे 'अर्थव्यवस्था का आध्यात्मिक मॉडल' भी कह सकते हैं। योग के जानकार यह जानते हैं कि ऊर्जा को नीचे से ऊपर की ओर, मूलाधार से सहस्त्रधार की ओर ले जाना कठिन तो है लेकिन आध्यात्मिक उन्नति या सस्टेनेबल विकास का वही शाश्वत मार्ग है। तो अगर सरल शब्दों में कहें तो हर तरह के विकास का पहला लाभार्थी सबसे अंतिम व्यक्ति हो, इस तरह का शीर्षासन जब आप अर्थव्यवस्था को करायेंगे तभी आप विकास के सच्चे साधक या समाज के सच्चे नेता कहे जायेंगे। अगर डॉ. रमन सिंह ईमानदारी के साथ ऐसा कर रहे हों या करने की सोच रहे हों तो निश्चय ही इस नवाचार से प्रदेश को एक नयी पहचान यहां के गांव के गरीब और किसान, मजदूर को एक अच्छी व्यवस्था मिलेगी इसमें कोई संदेह नहीं है।

एक अच्छे एवं कामयाब शासन के बावजूद प्रदेश में चुनौतियों का अंबार है। आज भी प्रदेश की चर्चा बिना नक्सलवाद के पूरी नहीं होती। लेकिन यह भी सच है कि नकारात्मकता की हद तक सोचने वाले लोग भी यह नहीं कहेंगे कि देश में लोकतंत्र को कोई खतरा है। ज़ाहिर है इसका अर्थ यह हुआ कि सब इस बात के प्रति आश्वस्त हैं कि अंततः देश–प्रदेश से नक्सलियों का सफाया हो कर ही रहेगा। लेकिन सबसे बड़ी, अमूर्त लेकिन खतरनाक चुनौती है देश–प्रदेश में 'असमानता' के राक्षस से निपटना। आज हम भले ही अपने सकल घरेलू उत्पाद पर गर्व करें, लेकिन पढ़ कर आपको ताज्जुब होगा कि प्रदेश के बजट के 3–4 गुने ज्यादे पैसे का केवल एक मकान मुंबई में अम्बानी का बन रहा है। इस तरह के घातक असमानता का निवारण या उसका प्रभाव कम करने के लिए प्रयास करना किसी भी नेतृत्व की प्राथमिकता होनी चाहिए।

इस मामले में राज्य द्वारा सुचारू रूप से संचालित चावल योजना की चर्चा उचित होगी। वास्तव में समाज के गरीब–गुरुबों को सम्मान से जीने, अपनी मौलिक ज़रूरतों के लिए महाजनों की चिरौरी से मुक्त कर सरकार ने वास्तव में ऐतिहासिक काम किया है। जिन लोगों को भी इस योजना से तकलीफ हो रही है उन्हें यह समझना होगा कि सदियों से 'मांग और आपूर्ति' का संतुलन, काम कराने वालों के पक्ष में रहा है। और इस असंतुलन का उपयोग कर उन्होंने जम कर मजदूरों का शोषण भी किया है। लेकिन आज अगर यह संतुलन थोड़ा सा मजदूरों के पक्ष में जाते दीखता है तो उन्हें इस 'प्रतिस्पर्द्धा' का सामना करना चाहिये। विकल्प चुनने की आज़ादी अगर श्रमजीवियों को मिली है तो उन्हें इसका आनंद एवं उत्सव मनाने का हक है। जो भी लोग इस योजना के कारण मजदूरों के आलसी हो जाने की बात करते हैं उनसे यह सवाल पूछा जाना चाहिए कि अगर करोड़ों–अरबों कमा लेने के बाद धन्ना सेठों के बच्चे आलसी होने के बदले ज्यादे तृष्णा के साथ ज्यादे से ज्यादे कमाने की फिराक में लग जाते हैं तो भला केवल चावल मिल जाने पर कोई आलसी कैसे हो जायेगा। अगर चावल के कारण ये लोग काम करना छोड़ देते तो क्या अभी भी धान की बंपर फसल या सकल घरेलू उत्पाद में रिकार्ड वृद्धि संभव हो पाता। बस बात इतनी है कि बदली हुई परिस्थिति में अपने खेत या कारखानों में काम कराने के लिए आपको मजदूरों की थोड़ी चिरौरी करनी पड़ेगी और यही जनता के शासन की सफलता का सबसे बड़ा सबूत भी होगा।

पुनः यह कहना होगा कि अगर डॉ. रमन ने अपने लिए सुविधाजनक आंकड़ों के बजाय आदिवासियों की मुस्कान को, मजदूरों के सुखी होने को, भूटान की तरह नागरिकों के प्रसन्नता को विकास का वास्तविक सूचकांक, उसे ही शासन की सार्थकता समझने की कोशिश की है तो सही अर्थों में उन्होंने अपने पार्टी और देश के मनीषी पंडित दीनदयाल उपाध्याय को सही सन्दर्भों में पढ़ने, समझने, शिरोधार्य एवं अंगीकार करने की कोशिश की है। ■

(लेखक छत्तीसगढ़ भाजपा के मुखपत्र 'दीपकमल' के समाचार संपादक हैं)

विकास से होगा चुनाव का फैसला

&l:tho dekj flUgk

fcहार विधानसभा चुनाव के निमित्त प्रचार अभियान अब जोरों पर है। राजग गठबंधन, जिसमें भाजपा और जदयू शामिल है, जहां अपने कार्यकाल में किए गए कार्यों का बखान कर रहा है वहीं कांग्रेस और राजद राजग सरकार पर राज्य को गर्त में धकेलने का आरोप लगा रही है। उल्लेखनीय है कि राज्य के 243 सीट वाले विधानसभा क्षेत्रों में 21 अक्टूबर से प्रारंभ पहले चरण का चुनाव छह चरण में 20 नवंबर तक चलेगा। सभी सीटों के लिए मतों की गिनती 24 नवंबर को होगी। पहले चरण के तहत 47 विधानसभा सीटों के लिए 21 अक्टूबर को मधुबनी, अररिया, सुपौल, किशनगंज, पूर्णिया, कटिहार, सहरसा और मधेपुरा जिले में मतदान संपन्न हो गया।

सभी राजनीतिक दलों के प्रमुख नेताओं ने प्रचार में अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। भारतीय जनता पार्टी की ओर से पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी, भाजपा संसदीय दल अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी, राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरूण जेटली, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वेंकैया नायडू, प्रदेश प्रभारी श्री अनंत कुमार, सह प्रभारी श्री धर्मेंद्र प्रधान, उपमुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी, प्रदेश अध्यक्ष श्री सी.पी. ठाकुर, राष्ट्रीय महासचिव श्री रविशंकर प्रसाद, मध्यप्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री प्रभात झा, राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री राजीव प्रताप रूढ़ी, महिला मोर्चा अध्यक्ष श्रीमती स्मृति ईरानी, राष्ट्रीय सचिव श्री नवजोत सिंह सिद्धू आदि वरिष्ठ नेतागण जनसभाओं को संबोधित कर चुनाव–प्रचार में जुटे हैं। जनता दल (यू) के लिए अध्यक्ष शरद यादव और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार वोट मांग रहे हैं। कांग्रेस की ओर से पार्टी अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी, प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, राष्ट्रीय महासचिव श्री राहुल गांधी चुनाव प्रचार में भाग ले रहे हैं। वहीं राष्ट्रीय जनता दल सुप्रीमो श्री लालू प्रसाद यादव, पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती राबड़ी देवी, सांसद रघुवंश प्रसाद सिंह तथा लोजपा नेता श्री रामविलास पासवान भी जोर–शोर से चुनाव–प्रचार में लगे हैं। बसपा ने सुश्री मायावती को चुनाव प्रचार में उतारा है।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने चुनाव–प्रचार को गति देने के लिए 'जनादेश यात्रा' शुरू की है। इस यात्रा के दौरान आयोजित जनसभाओं मे वे राज्य सरकार द्वारा किए गए उपलब्धियों को गिना रहे हैं और विकसित बिहार बनाने के लिए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को वोट देने की अपील कर रहे हैं।

कांग्रेस और राजद–लोजपा आपस में फिक्स मैच खेलकर जनता को गुमराह करने में लगे हैं। दोनों पार्टियां दिखावे के लिए एक–दूसरे पर आरोप लगा रही है। राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद ने चुनाव के बाद कांग्रेस के साथ तालमेल कर सरकार बनाने की संभावना से इनकार किया है, जबकि इसके उलट राजद के वरिष्ठ नेता एवं सांसद रघुवंश प्रसाद सिंह का कहना है कि राजद को कांग्रेस से नाता तोड़ना एक भयंकर भूल थी। यह राजद सुप्रीमो भी मान चुके हैं। उन्होंने चुनाव के बाद सरकार बनाने के लिए कांग्रेस से भी गठजोड़ के संकेत दिए।

झूठी बातें प्रचारित करना कांग्रेसी नेताओं की आदत है, प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह भी बिहार विधानसभा चुनाव के निमित्त प्रचार में ऐसा ही कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि बिहार के अररिया जिले में एक चुनावी सभा में डॉ. सिंह ने कहा था कि संप्रग सरकार 2004 से बिहार को प्रतिवर्ष एक हजार रुपये की केंद्रीय सहायता दे रही है, परंतु राज्य सरकार की लापरवाही के कारण इसका सदुपयोग नहीं हुआ। डॉ. सिंह द्वारा पेश तथ्यों की पोल खोलते हुए मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने कहा कि जब बिहार का विभाजन कर खनिज समृद्ध झारखंड का निर्माण हुआ तो केंद्र में अटल बिहारी वाजपेयी नीत राजग सरकार ने वर्ष 2002 से सूबे को समविकास योजना के तहत प्रतिवर्ष एक हजार करोड़

रुपये सहायता देने का निर्णय किया था। उन्होंने कहा कि यह सहायता 2004 में शुरू नहीं की गई थी और कांग्रेस द्वारा इसका श्रेय लेने की कोई बात ही इसमें नहीं है। उन्होंने प्रधानमंत्री को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि बिहार के सर्वदलीय समिति ने प्रधानमंत्री से मिलने का समय मांगा था, लेकिन उन्होंने समय नहीं दिया। पिछले पांच वर्षों में कई बार प्रधानमंत्री को बिहार आने का निमंत्रण दिया गया, परंतु वे नहीं आए। आज जब चुनाव का समय आया है तो उन्हें बिहार की सुध आई है।

समाचार चैनल स्टार न्यूज ने एक ओपिनियन पोल में दावा किया है कि बिहार विधानसभा के चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन, जिसमें भाजपा और जदयू शामिल है, को स्पष्ट बहुमत मिलने के आसार हैं, जबकि राजद और लोजपा को भारी नुकसान बताया गया है। ओपिनियन पोल में राजग की झोली में 170 सीटें दर्शायी गई हैं।

भाजपा ने जारी किया चुनाव घोषणा पत्र

भारतीय जनता पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वेंकैया नायडू ने आसन्न बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर 19 अक्टूबर को पार्टी का चुनावी घोषणा पत्र जारी किया। इस अवसर श्री नायडू ने कहा कि कहा कि भाजपा का मुख्य एजेंडा बिहार का तेजी से सर्वांगीण विकास करना है। उन्होंने बिहार के उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डा. सीपी ठाकुर और राजग के प्रदेश संयोजक श्री नंद किशोर यादव साहित पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिति में अपनी पार्टी के जारी किए गए घोषणा पत्र को एक संकल्प पत्र बताते हुए कहा कि उनकी पार्टी का मुख्य एजेंडा बिहार का तेजी से सर्वांगीण विकास करना है।

भाजपा ने अपने घोषणा–पत्र में गो–हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध का वादा किया है जबकि मजहब के आधार पर नहीं बल्कि वर्ग के आधार पर आरक्षण देने का वादा किया है। साथ ही विकास के अधूरे कामों को पूरा करने का वादा किया गया है और इसमें नए विकास कार्यों को समावेश करने की बात कही गई है। घोषणा–पत्र में पंचायती राज को और शक्तिशाली बनाने का वादा करते हुए सभी पंचायतों में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि जैसे कार्यों के लिए अलग–अलग लोगों की नियुक्ति करने का वादा किया गया है। सभी मदरसों को आधुनिक बनाने के साथ राज्य में 24 घंटे बिजली का वादा किया गया है। इसके अलावा कृषि के लिए रियायती दर पर बिजली उपलब्ध करने का वादा किया गया है। पत्र में उन पंचायतों को पुरस्कार देने की घोषणा की गई है जो अपराधमुक्त होंगे और जहां के सभी बच्चे स्कूल जा रहे होंगे। इसके साथ ही गोशाला को अनुदान देने का वादा किया गया है।

बिहार में दिख रहा बदलाव : लालकृष्ण आडवाणी

भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि बिहार में बदलाव आया है। इसका श्रेय नीतीश कुमार व सुशील कुमार मोदी के संयुक्त प्रयास को जाता है। श्री आडवाणी ने प्रधानमंत्री को बिहार में विकास नहीं दिखने पर अफसोस जताते हुए कहा कि दरअसल मनमोहन सिंह राजद से अलग नहीं हो सकते। चुनाव बाद ये सभी एक हो जाएंगे। श्री आडवाणी 19 अक्टूबर को मुजफ्फरपुर, मोतीहारी व दरभंगा में चुनाव सभाओं को संबोधित कर रहे थे।

श्री आडवाणी ने कहा कि पन्द्रह वर्षों के राजद शासनकाल में लोग उस बिहार में आना पसंद नहीं करते थे, जिसका अतीत गौरवशाली रहा। यहां पर पांच साल पहले बदहाली थी। अपहरण एक व्यवसाय बन चुका था। लेकिन बिहार में बदलाव आया है। सूबे के विकास की चौतरफा प्रशंसा हो रही है। यदि अच्छा शासन हुआ है, तो इनाम मिलना चाहिए। उन्होंने जहां राजग (जदयू–भाजपा) को सुशासन का पर्याय बताते हुए इसके उम्मीदवारों के लिए वोट मांगे, वहीं जात–पात की राजनीति करने वाले दलों का सूपड़ा साफ कर उन्हें 1977 की तरह सबक सिखाने की अपील की। मोतिहारी जिला स्कूल प्रांगण की सभा में श्री आडवाणी ने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को बिहार में विकास न दिखने पर अफसोस जताते हुए कहा कि दरअसल वे राजद से अलग नहीं हो सकते। चुनाव बाद सभी एक हो जाएंगे।

एनडीए के पक्ष में हवा : नितिन गडकरी

बिहार विधानसभा चुनाव के निमित्त एकदिवसीय चुनावी दौरे पर 13 अक्टूबर को पटना में जहां भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने दावा किया कि बिहार में हवा एनडीए के पक्ष में है तथा इस बार फिर वह सत्ता में काबिज होगी। वहीं सूबे में चुनावी सभाएं करने के बाद उन्होंने शीर्ष नेताओं की बैठक में चुनाव अभियान को तेज करने तथा यथासंभव रात्रि में सभाएं करने को कहा। श्री गडकरी ने कहा कि विभिन्न क्षेत्रों से जो फीडबैक मिला है उसके आधार पर उन्हें भरोसा है कि वर्ष 2005 के चुनाव के मुकाबले इस बार एनडीए की सीटें बढ़ेंगी। उन्होंने कहा कि इसकी वजह हमारे पास कानून–व्यवस्था की स्थिति में सुधार का अहम मुद्दा है। 15 साल के लालू–राबड़ी राज में कानून–व्यवस्था की जो स्थिति थी जनता पांच वर्ष के एनडीए सरकार के कार्यकाल की उससे तुलना कर ले। उससे अंतर का पता चल जायेगा। कांग्रेस पर तीखा व्यंग्य करते हुए श्री गडकरी ने कहा कि वह प्रचार में अपने बड़े से बड़े नेता को क्यों न उतार ले उससे कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। उसकी वोट कटवा वाली इमेज पहले से बनी हुई है तथा जनता उसे सिरे से नकार देगी।

बिहार को मदद कांग्रेस का दान नहीं : जेटली

भाजपा के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली ने कहा कि केंद्र से मिलने वाला अनुदान बिहार को दान नहीं बल्कि उसका अधिकार है। केंद्र पैसा देकर कोई अहसान नहीं कर रहा। यह मनमोहन सिंह या राहुल गांधी की राजनीतिक मजबूरी है कि उन्हें बिहार में विकास नहीं दिख रहा। श्री जेटली 16 अक्टूबर को मुजफ्फरपुर में चुनावी सभा के बाद संवाददाताओं से मुखातिब थे।

उन्होंने कहा कि मनमोहन अर्थशास्त्री तो अच्छे हैं, लेकिन यह भी हकीकत है कि उस पार्टी की सरकार चला रहे हैं जिसने बिहार में लालू की सरकार को पंद्रह साल तक समर्थन दिया। इस दौरान राज्य में विकास का पूरा ढांचा ही नष्ट हो गया। इस राज्य के पिछड़ेपन और यहां जंगलराज के लिए कांग्रेस भी जिम्मेदार है। पिछले पांच साल में नीतीश की सरकार ने जैसे–तैसे भयावह दुःस्वप्न व अंधेरे से राज्य को बाहर निकाला है। इस अभियान को गति देने के लिए नीतीश को फिर से जनादेश चाहिए। उन्होंने कहा कि नीतीश ने जब सत्ता संभाली तो विकास दर ऋणात्मक संकेत वाला था। अब यह दर साढ़े 11 से 12 प्रतिशत हो गई है जो विकास के प्रति राजग सरकार की प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

अभूतपूर्व होंगे चुनाव नतीजे : रविशंकर प्रसाद

भारतीय जनता पार्टी ने दावा किया है कि बिहार विधानसभा चुनाव के नतीजे 'अभूतपूर्व और चमत्कारी' होंगे। राज्य में राजग गठबंधन पहले से कही अधिक बहुमत के साथ सत्ता में वापसी करेगा। विकास के मुद्दे पर कांग्रेस को घेरते हुए भाजपा ने आरोप लगाया कि लालू–राबड़ी के राज में वह भी सत्ता की भागीदार थी तब उसने बिहार का विकास क्यों नहीं किया। पार्टी प्रवक्ता श्री रविशंकर प्रसाद ने नई दिल्ली में 16 अक्टूबर को संवाददाताओं से कहा, 'पूरे बिहार में जदयू–भाजपा गठबंधन के पक्ष में जबर्दस्त माहौल है। चुनावी नतीजे इतने आश्चर्यजनक होंगे कि विपक्ष की आंखे खुली रह जाएंगी।' उन्होंने कहा, बिहार की जनता इस बार जाति, मजहब और संप्रदाय से ऊपर उठकर जदयू–भाजपा गठबंधन को समर्थन देगी।

राजग राज में अपराधियों का हुआ सफाया : सुशील मोदी

उप मुख्यमंत्री व भाजपा नेता श्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि सूबे में अपराध नियंत्रण की नीतीश सरकार की प्राथमिकता सर्वत्र दिख रही है। लालू राज में अपराधियों का गढ़ बने मुजफ्फरपुर से अपराध का नामोनिशान मिट गया है। राजग की सरकार ने पांच वर्षों में 55 हजार अपराधियों को जेल की सलाखों में डाला। वहीं 20 हजार अपराधियों को चुनाव लड़ने से वंचित कर लोकतंत्र का सम्मान बढ़ाया है। मुजफ्फरपुर विधानसभा क्षेत्र के राजग प्रत्याशी सुरेश शर्मा के पक्ष में पताही हाई स्कूल में सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि बिहार में विकास को आगे बढ़ाने के लिए लालू प्रसाद को सत्ता से दूर रखना होगा।

यह चुनाव १५ वर्ष बनाम ५ वर्ष का है : सीपी ठाकुर

यह चुनाव 15 वर्ष बनाम 5 वर्ष की है। कांग्रेस के सहयोग से 15 वर्षों तक बिहार का सत्ता संभाले लालू–राबड़ी सरकार ने जंगल राज्य कायम कर दिया था। महज पांच वर्षों में ही नीतीश–मोदी की सरकार ने सुबे में कानून राज कायम कर दिया। उक्त बातें भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डा. सीपी ठाकुर ने रोसड़ा प्रखंड के उच्च विद्यालय बैधनाथपुर के प्रांगण में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कही। ■

छह नगर निगमों पर भाजपा ने लहराया परचम

गुजरात में भारतीय जनता पार्टी ने 12 अक्टूबर को छह नगर निगमों के चुनावों में जीत हासिल करते हुए इन पर अपना कब्जा बरकरार रखा और केवल एक नगर निगम को छोड़कर शेष सभी पर दो तिहाई बहुमत से विजय प्राप्त की। भाजपा की इस जीत से कांग्रेस को करारा झटका लगा है। जीत की इस खुशी में हजारों की संख्या में भाजपा कार्यकर्ता प्रमुख शहरों में सड़कों पर उतर आए। उन्होंने पटाखे छोड़े और नाच–गाकर खुशियां मनाईं। राज्य निर्वाचन आयोग के सूत्रों ने पुष्टि की कि भाजपा ने कांग्रेस को पराजित करते हुए अहमदाबाद, वड़ोदरा, राजकोट, सूरत, जामनगर और भावनगर नगर निगमों पर कब्जा कर लिया।

भाजपा ने पांच नगर निगमों में दो–तिहाई बहुमत से जीत दर्ज कराई है, जबकि जामनगर में दो–तिहाई बहुमत से मात्र तीन सीट पीछे रह गई है। छह नगर निगमों में कुल 555 सीटों में से भाजपा ने 441 पर कब्जा कर लिया है, जबकि कांग्रेस 100 सीटों पर सिमट कर रह गई। निर्दलियों को मात्र 14 सीटें प्राप्त हो सकी हैं।

भाजपा ने अहमदाबाद में अपनी सीटों की संख्या में काफी बढ़ोतरी की है। वहां इस बार सीटों की कुल संख्या 2005 के 129 के मुकाबले बढ़ाकर 189 सीटें कर दी गई थीं। भाजपा ने यहां 2005 के 96 के मुकाबले इस बार 148 सीटें जीतीं। कांग्रेस ने 2005 के 32 के मुकाबले इस बार 38 सीटें जीतीं।

सूरत में जहां इस बार सीटें 102 से बढ़कर 114 हो गई थीं, भाजपा ने 90 के मुकाबले इस बार 98 सीटें जीतीं और कांग्रेस ने 11 के मुकाबले 14 सीटें।

भावनगर में भाजपा 2005 के 39 सीटों के मुकाबले इस बार 41 सीटें जीतने में सफल हुई। वहीं वड़ोदरा में उसकी सीट संख्या इस बार 76 से घटकर 61 पर आ गई। कांग्रेस की सीट संख्या वड़ोदरा में सात से बढ़ कर 11 हो गई। जामनगर में भाजपा की सीट संख्या 37 से घट कर 35 पर आ गई, जबकि कांग्रेस नौ सीटों से बढ़ कर 16 पर पहुंच गई। छह सीटें निर्दलियों के हिस्से गई हैं। निकाय चुनावों में पहली बार ऑनलाइन वोटिंग का इस्तेमाल किया गया।

जीत से खुश मुख्यमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने राज्य की जनता को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि भाजपा ने लगभग सभी स्थानों पर 80 प्रतिशत मत प्राप्त किए और शेष मत अन्य दलों और निर्दलियों के खाते में गए। वरिष्ठ भाजपा नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी ने इस शानदार जीत पर मोदी को बधाई दी और कहा कि कांग्रेस का सफाया हो गया है। ■

भाजपा सरकार की विकासात्मक कार्यों की जीत : गडकरी

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने गुजरात नगर निगम चुनाव में भाजपा की इस विजय को मुख्यमंत्री नरेंद्र भाई मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार की विकासात्मक कार्यों की जीत बतलाया है।

श्री गडकरी ने भाजपा के इस ऐतिहासिक जीत के लिए गुजरात की जनता को धन्यवाद देते हुए कहा है कि वास्तव में यह विकास की जीत है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार कांग्रेस गुजरात सरकार के खिलाफ सीबीआई का दुरुपयोग कर सोहराबुद्दीन जैसे आतंकवादी की मौत को लेकर राजनीति में सांप्रदायिकता का विष घोलने का प्रयास करती रही है। यही नहीं, विभिन्न संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग कर राज्य सरकार को बदनाम करने की भी कोशिश की है, गुजरात की जनता ने कांग्रेस को इसका करारा जवाब दे दिया है। गुजरात की जनता ने आतंकवाद के पैरोकारों का नहीं बल्कि विकास के पक्षकारों का साथ दिया है। ■

उमर अब्दुल्ला का गैर-जिम्मेदाराना बयान अलगाववादियों को शह : डॉ. जोशी

जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अबदुल्ला द्वारा दिये गये बयान पर भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ और पूर्व केंद्रीय मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि उनका यह बयान कई आशंकाओं को जन्म देती है। उन्होंने कहा कि क्या उमर यह कहना चाहते हैं कि जम्मू–कश्मीर का भारत के साथ विलय हुआ ही नहीं है। ऐसा कहकर वे भारतीय संविधान को चुनौती दे रहे हैं। उनका यह बयान बेहद गैर–जिम्मेदाराना है और ऐसा कहकर वे अलगाववादी और विदेशी ताकतों की ही भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं, जो बेहद चिंताजनक है।

भाजपा के वरिष्ठ नेता व पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी द्वारा 08 अक्तूबर को जारी किया गया प्रेस वक्तव्य

श्री जोशी ने कहा कि जम्मू–कश्मीर को भारत–पाक का मसला बता कर उमर देश के घरेलू मुद्दे का अंतर्राष्ट्रीयकरण करना चाहते हैं। उमर का यह कहना कि कश्मीर समस्या का समाधान किसी आर्थिक अथवा विकासात्मक पैकेज में निहित नहीं है तो क्या वे यह कहना चाहते हैं कि जम्मू–कश्मीर का मसला उसकी स्वायत्तता में निहित है। श्री जोशी ने कहा कि यदि वे भारत के संविधान में आस्था रखते हैं तो उन्हें देश की एकता व अखंडता का भी ध्यान रखना होगा। उन्हें ऐसे बयान नहीं देने चाहिए जिसकी आवाज देश के उत्तर–पूर्वी राज्यों जैसे समस्याग्रस्त राज्यों तक जाए और वहां के पृथकतावादी ताकतों का हौसला बढ़े।

जम्मू–कश्मीर को भारत–पाक का मसला बता कर उमर देश के घरेलू मुद्दे का अंतर्राष्ट्रीयकरण करना चाहते हैं। उमर का यह कहना कि कश्मीर समस्या का समाधान किसी आर्थिक अथवा विकासात्मक पैकेज में निहित नहीं है तो क्या वे यह कहना चाहते हैं कि जम्मू–कश्मीर का मसला उसकी स्वायत्तता में निहित है। यदि वे भारत के संविधान में आस्था रखते हैं तो उन्हें देश की एकता व अखंडता का भी ध्यान रखना होगा।

श्री जोशी ने कहा कि उमर को ऐसे बयान के बजाए यह बताना चाहिए कि विस्थापित कश्मीरी पंडितों और वर्तमान में वहां सिखों पर हो रहे अत्याचार पर अब तक क्या कार्यवाही हुई है और इस संबंध में उनकी आगे की रणनीति क्या है?

श्री जोशी ने कहा कि हमने इस मसले को सदन में भी कई बार उठाया है जिस पर केंद्रीय गृहमंत्री ने कहा था कि जम्मू–कश्मीर की समस्या परिस्थिति विशेष है अतः इसका समाधान विशेष तरीके से ही होना चाहिए। श्री जोशी ने कहा कि आखिर वह विशेष परिस्थिति और उसका विशेष समाधान क्या है, इसका स्पष्टीकरण गृहमंत्री ने अब तक नहीं दिया है। केंद्रीय गृहमंत्री का यह कहना है कि पिछली सरकार के समय कश्मीर मसले पर जो भी वार्ता हुई, वह पूरी नहीं हुई। गृहमंत्री क्या यह बताने का कष्ट करेंगे कि वह कौन–सी सरकार थी और किन–किन मसलों पर अमल नहीं हुआ।

श्री जोशी ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा के भारत आने से पहले भारत सरकार की सरगर्मियां बढ़ गई हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा के भारत आने पर उन्हें पाकिस्तान को स्पष्ट संदेश देने के लिए कहा जाए कि पाकिस्तान आतंकवाद की रोकथाम के लिए ठोस कदम उठाएं।

उन्होंने कहा कि दरअसल अमेरिका अफगानिस्तान से भागने के लिए पाकिस्तान से मदद चाहता है, जिसके लिए पाकिस्तान अरबों रुपए ले चुका है। लेकिन पाकिस्तान इसका इस्तेमाल भारत के विरुद्ध आतंकवादी कार्यवाही में कर रहा है। ओबामा के समक्ष यह स्पष्ट बात रखनी चाहिए कि वह पाकिस्तान पर दबाव डाले कि वह सीमापार घुसपैठ की कार्यवाही बंद करे और आतंकवादी कैम्पों को समाप्त करे।■

पीड़ित परिवारों के साथ विश्वासघात करने वाले चेहरे को बेनकाब किया जाये – सुषमा स्वराज

Hkkरतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि भोपाल गैस त्रासदी में मौत का शिकार बने हजारों लोग और गैस त्रासदी से पीड़ित लाखों लोगों के साथ बार–बार दगा और विश्वासघात किया गया। इस मामले में संसद में पहले ही 1989 के समझौते को रद्द करने और नया समझौता करके गैस पीड़ितों के आंसू पोछने और उन्हें राहत की पर्याप्त राशि दिलाने की मांग की जा चुकी है। गैस पीड़ितों को न्याय सुनिश्चित करने के लिये बहुत काम किये जाने की आवश्यकता है। मध्यप्रदेश सरकार ने आयोग गठित किया है।

गत 16 अक्टूबर को पत्रकारों से चर्चा करते हुए श्रीमती सुषमा स्वराज ने देश के विख्यात विधिकार और सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ एडव्होकेट तथा केन्द्र सरकार में विधि सलाहकार रहे बी.सेन की आत्मकथा ''सिक्स डिकेड्स आफ लॉ पॉलिटिक्स एण्ड डिप्लोमेसी'' का हवाला देते हुए सनसनीखेज खुलासा किया। बी.सेन ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि जब वे अमेरिका में थे और अमेरिका में भोपाल गैस त्रासदी का मामला अमेरिका के न्यायालय में चलाये जाने की चर्चा जोरों से हो रही थी और कई वकील उत्साहित थे तभी उस दरम्यिान उनकी भेंट वाशिंगटन में एक उस वकील से हुई जो यूनियन कार्बाइड का एडव्होकेट रहा है। उसने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि उन्हें एक अच्छा फिक्सर मिल गया जिससे यूनियन कार्बाइड 470 मिलियन डॉलर में भोपाल गैस त्रासदी का समझौता कराने में सफल हो गया। सुषमा स्वराज ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा कि बी.सेन की आत्मकथा में लिखे गये तथ्यों से हमारी उन सारी आशंकाओं की पुष्टि हो जाती है कि भोपाल गैस त्रासदी से पीड़ित हजारों लाखों बेनसीब लोगों के साथ विश्वासघात किया गया है। उन्होंने यूनियन कार्बाइड के एडव्होकेट के मुंह से कहे गये फिक्सर का चेहरा बेनकाब किये जाने की मांग की है।

गंभीर आरोप : लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष व भाजपा की वरिष्ठ नेता सुषमा स्वराज ने भोपाल में शनिवार को सुप्रीम कोर्ट के नामचीन वकील बी.सेन की पुस्तक 'सिक्स डिकेड्स ऑफ लॉ, पॉलिटिक्स एंड डिप्लोमेसी' के हवाले से भोपाल गैस हादसे के समझौते में दलाली का आरोप लगाया है। पेट्र

श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि यूनियन कार्बाइड की मंशा थी भोपाल गैस त्रासदी का मामला भारत में ही चले क्योंकि अमेरिका में मामला चलने से यूनियन कार्बाइड पर आर्थिक बोझ पड़ता जबकि भारत में मामले का निराकरण तुच्छ राशि से ही होना संभव रहा है और इस बात में फिक्सर के जरिए यूनियन कार्बाइड अपनी तिकड़मों में कामयाब रही है। फिक्सर के जरिए हजारों लाशों का सौदा किया गया है। इसकी विस्तार से जांच किए जाने की सुषमा स्वराज ने मांग की। उन्होंने समझौता के दलाल का नाम उजागर किये जाने के उपायों की विस्तार से जानकारी दी।

श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि बी.सेन कानून के क्षेत्र की सुप्रीम कोर्ट में वकालत के क्षेत्र की मशहूर हस्ती रही है उनके कहे अनुसार मामले को सुप्रीम कोर्ट को खुद सुमोटो लेकर विस्तृत जांच करना चाहिए। फिक्सर कौन है इस बात की जांच करने में न्यायालय सक्षम है।

केन्द्र सरकार अज्ञात व्यक्ति के विरूद्ध प्राथमिकी दर्ज कर इस बात का पता लगाये कि यूनियन कार्बाइड के समझौते के मामले में दलाल कौन था? फिक्सर का चेहरा सामने आना चाहिए।

राज्य सरकार ने गैस त्रासदी की जांच के लिए आयोग का गठन किया है। राज्य सरकार आयोग के टर्म्स एण्ड रिफरेंस में फिक्सर की जांच का विषय शामिल करें। इस संबंध में सुषमा स्वराज ने बताया कि मुख्यमंत्री जी से उनकी चर्चा हो चुकी है। वे सहमत भी दिखे है।

श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि पत्रकारिता की खोजी दृष्टि तीव्र है वह इस फिक्सर का पता लगाने के लिये उस दिशा में अपने ध्यान और प्रयास केन्द्रित करे यह एक जनहित का प्रयास होगा। खोजी पत्रकारिता को इस मामले में सक्रियता दिखाना चाहिए। ■

अपनी विरासत के मूल्यवान इतिहास से परिचित हों

& çHkkr >k

Hkkरतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और सांसद श्री प्रभात झा ने कहा कि देश की अखण्डता के प्रति आरंभ से ही भारतीय जनसंघ समर्पित रहा है। जम्मू–कश्मीर, कच्छ, गोवा मुक्ति, उत्तरांचल में पार्टी संगठन ने देश की अखण्डता के लिए लगातार संघर्ष किया है। डॉ.श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने जम्मू–कश्मीर को देश की भावनात्मक एकता और अखण्डता से जोड़ने के लिए अपने प्राणों का बलिदान किया है। हमें अपनी विरासत के मूल्यवान इतिहास से रू–ब–रू होना चाहिए। श्री प्रभात झा छतरपुर में पार्टी जिला पदाधिकारियों और मंडलों के पदाधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं के सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

श्री प्रभात झा ने कहा कि देश में अनुसूचित जाति और जनजातियों के सर्वाधिक सांसद और विधायक भारतीय जनता पार्टी से चुने गए हैं। यह इस बात का सबूत है कि भारतीय जनता पार्टी जात–पात वर्ग–समुदाय में भेद नहीं रखती। सर्वधर्म समभाव हमारी पंचनिष्ठाओं का प्रमुख बिंदु है। उन्होंने कहा कि राजनीति हमारे लिए मिशन है। समाज को बदलने का सशक्त साधन है। भारतीय जनता पार्टी ने सेवा के लिए और समाज के परिवर्तन के लिए राजनीति में पदार्पण किया है। इसलिए हमें यह बात हमेशा जेहन में रखना पड़ेगा कि हम राजनीति में सेवा के लिए आए हैं, यदि इस कार्य में विफल रहे, तो हमारी सारी मेहनत और परिश्रम व्यर्थ जावेगा। हमें सेवा के प्रकल्प आरंभ करना चाहिए। व्यर्थ के आडम्बर और प्रचार से बचकर सारी शक्ति सेवा में लगाना चाहिए। सेवा से ही कार्यकर्ता की जनता के बीच पहचान और स्वीकार्यता बनती है। भारतीय जनता पार्टी को प्रदेश की जनता ने सेवा का दायित्व सौंपा है। राज्य सरकार के कार्यक्रम का सफल क्रियान्वयन सुनिश्चित करके हम आम जनता को राहत पहुंचा सकते हैं। उसकी खुशहाली का रास्ता दिखा सकते हैं। इसलिए हर कार्यकर्ता को सरकार के कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन के लिए उपकरण के रूप में अपने आप को आगे लाना चाहिए। इससे दूसरों में भी सेवा की ललक पैदा होगी। पार्टी की विचारधारा समाज की धारा बनेगी। बड़े ही मार्मिक शब्दों में श्री प्रभात झा ने कहा कि हमारा राजनीतिक जीवन दूसरों के लिए समाधान होना चाहिए, हम स्वयं समस्या न बने। समस्या बनने से हमारी सारी क्षमता समाप्त हो जावेगी और उपयोगिता पर प्रश्न चिह्न लग जाएगा।

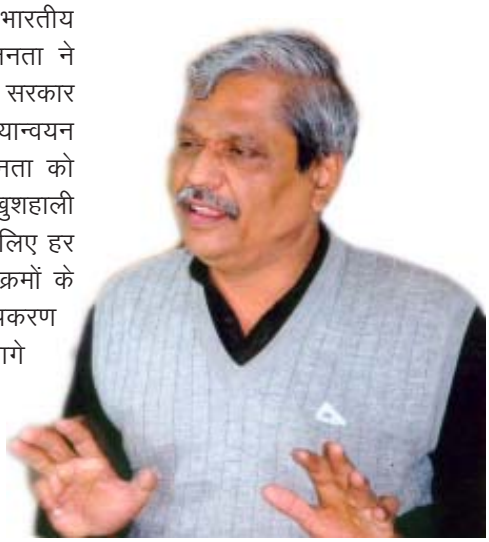

उन्होंने कहा कि प्रदेश में 29 संसदीय क्षेत्र हैं, 230 विधानसभा क्षेत्र हैं, 14 नगर निगम हैं। नगर पालिकाएं, नगर पंचायतें और ग्राम पंचायतें उनमें चुनाव होते हैं, लेकिन उनकी सीटें सीमित होती हैं। जबकि हर दिन पार्टी का जनाधार बढ़ रहा है। कार्यकर्ताओं की संख्या में वृद्धि हो रही है। हमें उनमें राजनीतिक संस्कृति का विकास करना होगा और मैदानी वास्तविकता को समझना होगा। हमें पदों के पीछे भागने की प्रवृत्ति छोड़ना पड़ेगी। इस वास्तविकता से इत्तेफाक करना पड़ेगा कि हम अपना राजनीतिक कद सेवा का क्षेत्र बढ़ाकर अधिक स्वीकार्यता बना सकते हैं। पद के चक्कर में पड़कर सिर्फ हताश और निष्क्रिय बन सकते हैं। आपने कार्यकर्ताओं से कहा कि सेवा, समर्पण और शहादत पार्टी की पहचान है। हम सामुदायिक भावना से कार्य करें। इस सम्मेलन में सांसद वीरेन्द्र कुमार, विधायक ललिता यादव, जिला अध्यक्ष घासीराम पटेल, पुष्पेंद्र सिंह सहित बड़ी संख्या में पार्टी पदाधिकारी उपस्थित थे। ■

व्यंग्य चित्र